ISSN-2321-3981

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

फाल्गुन २०८० मार्च २०२४

₹ ३०

कविता

फूल और काँटा

– रमेशकुमार गुप्त

एक महकता फूल खिला।
नीचे काँटा भी निकला।।

काँटा बोला– ''मित्र सुमन।
व्यर्थ तुम्हारा है जीवन।।
कितने कोमल हो सुन्दर।
मुरझाते क्षण में खिलकर।।
गरमी, बरसा, शीत, पवन।
तुम कर सकते नहीं सहन।।

रस लेती तितली चंचल।
खुशबू ले भौरों का दल।।
सबको प्यार लुटाता है।
बदले में क्या पाता है?
तुझ पर आती मुझे दया।
जीवन तेरा व्यर्थ गया।।

देख मुझे मैं तना खड़ा।
तनिक न कुछ मेरा बिगड़ा।।

सब मुझ से भय खाते हैं।
कभी न हाथ लगाते हैं।।''
कहा फूल ने तब हँसकर–
''मुझे न मिट जाने का डर।।
पल भर ही मेरा जीवन।
पर महकाता हूँ उपवन।।

प्यार सभी का पाता हूँ।
कंठहार बन जाता हूँ।।''
यह सुन काटाँ खिसियाया।
करनी पर था पछताया।।

– खीरी (उ. प्र.)

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

(विद्या भारती से सम्बद्ध)

फाल्गुन २०८० • वर्ष ४४
मार्च २०२४ • अंक ०९

प्रधान संपादक
कृष्ण कुमार अष्ठाना

प्रबंध संपादक
शशिकांत फडके

मानद संपादक
डॉ. विकास दवे

कार्यकारी संपादक
गोपाल माहेश्वरी

मूल्य

एक अंक	:	३० रुपये
वार्षिक	:	२०० रुपये
पन्द्रहवर्षीय	:	२००० रुपये
सामूहिक वार्षिक	:	१५० रुपये

(कम से कम १० अंक लेने पर)

कृपया शुल्क भेजते समय चेक/ड्राफ्ट पर केवल 'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' लिखें।

संपर्क
४०, संवाद नगर,
इन्दौर ४५२००१ (म. प्र.)
दूरध्वनि: (०७३१) २४००४३९

e-mail:
व्यवस्था विभाग
devputraindore@gmail.com
संपादन विभाग
editordevputra@gmail.com

अपनी बात

प्यारे भैया-बहिनो!

होली का माह है तो रंगों की बात करना स्वाभाविक ही है लेकिन अपनी बात में मैं इस बार लाल, हरे, नीले, पीले रंगों की बात न करते हुए उन रंगों की बात करना चाहूँगा जो हमारे जीवन को 'उत्सव' बनाए रखते हैं।

जैसे **ममता का रंग**, जो आपके माता-पिता और परिवार से मिलता है। बहुत मूल्यवान रंग है यह जिसे मिलता है, उससे अधिक इसका मूल्य वह जानता है जिसे यह मिला ही नहीं है। कभी ऐसे किसी बच्चे को जिसे ममता का रंग न मिला हो या छिन चुका हो अपने माता-पिता से कहकर उसे भी दिलवाने का ध्यान रखिए।

मित्रता का रंग, जो मन पर चढ़ता है तो हमें खाने-पीने-सोने की भी सुधि नहीं रहती। तब यह तक याद नहीं रहता कि हम क्या पहने हैं? कहाँ बैठे हैं? सचमुच संसार के सबसे अनमोल संबंधों में एक है मित्रता। उसके मित्र बनिए न, जो मित्रों के बिना अकेला है।

परिश्रम का रंग- दुनिया में सबसे उजला वही है जो परिश्रम करने से काला पड़ गया है, यह तो मैंने एक मुहावरा-सा कह दिया काला पड़ना आवश्यक नहीं पर बौद्धिक परिश्रम के साथ-साथ शारीरिक परिश्रम भी करना ही चाहिए। स्वावलंबन के लिए भी और सहायता के लिए भी।

सच का रंग- चाहे कितनी भी परतों में दबा रहे सच्चाई के रंग की चमक उभर कर ही रहती है और इस रंग के बिना बाकी सारे रंग फीके ही रहते हैं।

साहस का रंग- सुविधा से सम्पन्न सामान्य कार्यों में वह निखार नहीं रहता जो असाधारण कार्यों को करने से प्राप्त होता है। साहस जीवन का सबसे चटख रंग है। यह और मोहित करता है जब साहस किसी संकट में पड़े व्यक्ति के लिए दिखाया जाए।

देशभक्ति का रंग- भक्ति ही अपने आप में सबसे अनूठा रंग है, इसके कई रूप हो सकते हैं लेकिन यही वह रंग है जो अपने श्रद्धेय से आपको एकाकार बना सकता है। भक्त प्रह्लाद को यही रंग तो चढ़ा था जिनके नाम पर 'होलिका दहन' की परम्परा बनी। भगतसिंह, सुखदेव और राजगुरु को यह देशभक्ति के रंग के रूप में चढ़ा और इसी मार्च माह में वे देश पर बलिदान होकर स्वतंत्रता सेनानी बन गए। सोचिए, जैसा स्वामी विवेकानंद का भाव था आप हम भी राष्ट्र को ही अपना आराध्य बनाकर उसकी भक्ति यानि राष्ट्रभक्ति के रंग में अपना जीवन सराबोर नहीं कर सकते।

जीवन के भी रंग तो और भी है पर अभी तो इतना ही। रंगोत्सव की बधाई।

आपका
बड़ा भैया

web site - www.devputra.com

।। अनुक्रमणिका ।।

कहानी

- होली के संदेश -डॉ. सेवा नंदवाल ०५
- रसोईघर में मनी होली -डॉ. शील कौशिक ०८
- दादी का दवाखाना -मदन मोहन 'अरविन्द' १८
- कवि बौडम हास्य सम्मेलन में -अरविन्द कुमार साहू २६
- पानी की आत्मकथा -रामगोपाल राही ३६
- रंग मंच का जादूगर -अशोक शर्मा ४४

रेखाचित्र

- गुरुदीन सिंह 'दीन' -दिनेशप्रताप सिंह 'चित्रेश' २२

आलेख

- विदेशों में भी मनाई जाती है होली -राजकुमार जैन १६

चित्रकथा

- रंगों से बचाव -देवांशु बत्स २१
- तारीफ -संकेत गोस्वामी ३२

कविता

- फूल और काँटा -रामकुमार गुप्त ०२
- कोयल -चक्रधर शुक्ल ०७
- होली के रंग -सुधा दुबे ३३
- तुमको नमन हमारा -राजेन्द्र प्रसाद श्रीवास्तव ५०

स्तंभ

- बाल साहित्य की धरोहर -डॉ.नागेश पाण्डेय 'संजय' १०
- गोपाल का कमाल -तपेश भौमिक ३३
- सच्चे बालवीर -रजनीकांत शुक्ल ३४
- शिशु महाभारत -मोहनलाल जोशी ३८
- विज्ञान व्यंग्य -संकेत गोस्वामी ३९
- घर का वैद्य -उषा भण्डारी ४०
- अशोकचक्र : साहस का सम्मान - ४१
- राजकीय मछलियाँ -डॉ. परशुराम शुक्ल ४१
- पुस्तक परिचय - ४२
- शिशु गीत -गोविन्द भारद्वाज ४३
- छः अँगुल मुस्कान - ४३
- आपकी पाती - ४६
- विस्मयकारी भारत -रवि लायटू ५१

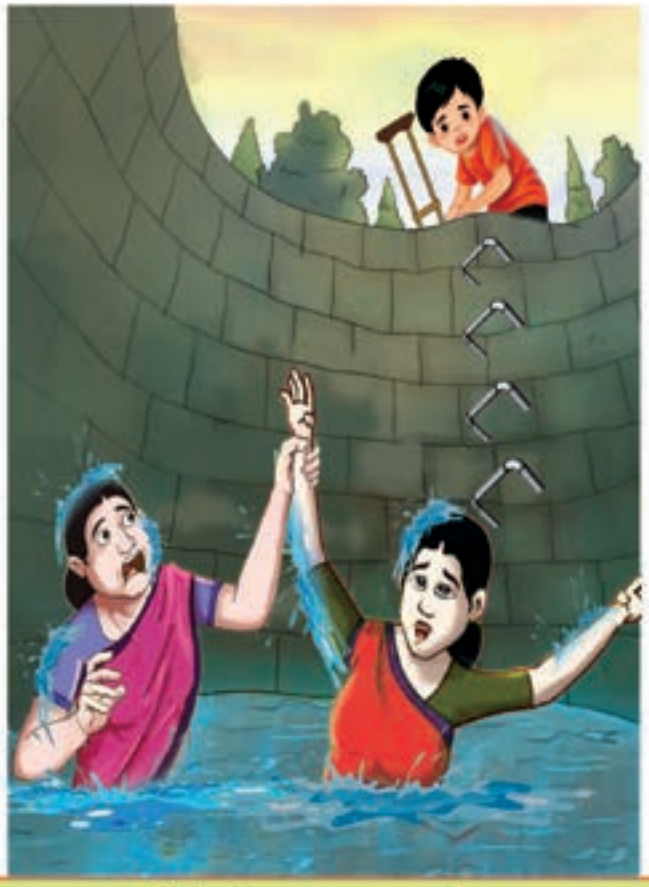

क्या आप देवपुत्र का शुल्क नेट बैंकिंग से जमा करा रहे हैं? तो कृपया ध्यान दें!

देवपुत्र का शुल्क इसकी प्रकाशन संस्था - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** के खाते में ही जमा कराएँ।
विवरण इस प्रकार है- खातेदार - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** बैंक - **स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, एम.वाय.एच.परिसर शाखा, इन्दौर** खाता क्रमांक-**38979903189 चालू खाता (Current Account) IFSC- SBIN0030359** राशि जमा करने के बाद जमा पर्ची को देवपुत्र के ई-मेल **ID devputraindore@gmail.com** पर अवश्य भेजिए। नेट बैंकिंग में प्रेषक के कॉलम में पहले अपना स्थान लिखें फिर **सरस्वती शिशु मंदिर** का संक्षेप लिखें तो सन्देश ठीक आता है। उदाहरण के लिए -सरस्वती शिशु मंदिर, संजीत मार्ग, मंदसौर ने देवपुत्र का शुल्क भेजा तो उन्हें प्रेषक में लिखना चाहिए - "**मन्दसौर संजीत मार्ग SSM**" आशा है सहयोग प्रदान करेंगे।

होली के संदेश

– डॉ. सेवा नन्दवाल

''बच्चो! क्या मैं जान सकता हूँ कि तुम होली पर्व क्यों मनाते हो?'' मनोज जी ने कक्षा में पहुँचते ही प्रश्न दाग दिया। विद्यार्थीगण समझ गए कि होली निकट है इसलिए आचार्यजी हमारे मन को टटोलना चाहे चाहते हैं। प्रश्न आसान था किन्तु उत्तर नहीं।

''नहीं कारण नहीं जानना चाहता क्योंकि कारण हम सबको विदित है। होली मनाने की बहुत सारी कथाएँ प्रचलित हैं पर सबसे अधिक यह वाली है....'' कहते हुए मनोज जी रुक गए और प्रश्नवाचक दृष्टि से विद्यार्थियों को घूरते हुए कुश से बताने को कहा।

कुश तत्परता से उठ खड़ा हुआ– ''आचार्यजी! बालक प्रह्लाद को भस्म करने के उद्देश्य से उसकी बुआ होलिका ने अग्नि से प्राप्त वरदान का दुरुपयोग करने का प्रयत्न किया। लेकिन ईश्वरीय सत्ता ने बुरा चाहने वाली होलिका को ही अग्नि में जलाकर भस्म कर दिया और प्रह्लाद सकुशल बाहर निकल आया।''

दक्ष ने सहमति जताई– ''हाँ आचार्यजी! कुश ठीक बता रहा है। हमारी पौराणिक मान्यताओं के अनुसार होली पर्व राक्षसी होलिका से जुड़ा है। जिसे अग्नि में न जलने का वरदान प्राप्त था। पर जब वह दुर्भावना के वशीभूत अपने भाई हिरण्यकश्यपु के पुत्र प्रह्लाद को जलाकर भस्म करने की मंशा से अग्नि के बीच बैठी तो स्वयं जलकर भस्म हो गई तथा प्रह्लाद का बाल भी बांका नहीं हुआ। इस प्रकार बुराई का

दहन हुआ और अच्छाई को आँच नहीं आई।''

''हाँ यह तो उचित है पर मैं इसके पीछे के रहस्य के बारे में पूछ रहा था।'' मनोज जी ने अपना मंतव्य प्रकट किया। बच्चे अनभिज्ञ बन शांत बने रहे तो मनोज ने स्पष्ट किया– ''बुरे संस्कारों, नास्तिकता तथा अभिमानरूपी होलिका को परमात्मा रूपी दिव्य अग्नि की पापदहन शक्ति में होम कर देना ही ''होलिका दहन'' है और हम प्रेम तथा ज्ञान रंगों में परस्पर रंगकर मन के कुप्रभावों और कुसंस्कारों का कचरा दूर कर सकें, यही होली का रहस्य है।''

''जी आचार्यजी!'' वैशाली ने हामी भरी। ''हम सभी लोग होली और इस त्योंहार में होने वाली मौज मस्ती से बहुत उत्साहित रहते हैं। लेकिन हमें त्योंहारों के वास्तविक अर्थ, महत्व और हमारे जीवन में उनकी आवश्यकता के विषय में भी पता होना चाहिए वर्ना ये त्योंहार केवल हुड़दंग तक सीमित रह जाएँगे। आज हम जानने का प्रयास करेंगे कि इस रंग–बिरंगे त्योंहार को क्यों मनाएँ तथा उसका हमारे जीवन में क्या महत्व है?'' मनोज जी बोले।

''बताइए आचार्यजी?'' भव्या ने पहले उत्सुकता दर्शाई। ''देखो बच्चों होली की अनेक, प्रचलित कथाओं में एक समानता है। वह यह कि इस पर्व में 'असत्य पर सत्य की विजय' और 'दुराचार पर सदाचार की विजय' का उत्सव मनाने की बात कही गई है।'' मनोज जी ने बताया। ''जी आचार्यजी! दशहरा पर्व भी इसी उद्देश्य से मनाया जाता है।'' पल बोला।

''सोचने की बात यह है कि केवल लकड़ी, कंडे जलाने से बुराई का नाश नहीं होगा क्योंकि उसकी पहुँच हमारे मन के भीतर तक है इसलिए यहाँ होली पर ज्ञान के रंग में परस्पर भीगकर मन के दूषित विचारों तथा कुसंस्कारों का करकट दूर कर दें, यही होली और होलिकोत्सव का वास्तविक रहस्य है या उद्देश्य होना चाहिए। अब तुम्हारी बारी है, बताओ।'' मनोज जी ने स्पष्ट करते हुए विद्यार्थियों से योगदान की अपेक्षा की।

मानस दुविधापूर्ण शब्दों में बोला– ''क्या आचार्यजी होली पर्व सफाई–स्वच्छता का संदेश नहीं देता?'' हनी बीच में टपक पड़ी– ''यह लो होली तो गंदगी को न्यौता देती है।'' मनोज जी ने हस्तक्षेप किया– ''मानस ठीक कहता है। होली को 'नवान्नेष्टि' भी कहा गया है। इस समय नया अन्न आता है जिसे अग्नि को समर्पित कर प्रसाद पाते हैं याने इस समय प्रकृति में नए फल खिलते हैं..... क्या इसमें स्वच्छता का गुप्त संदेश निहित नहीं?''

''आचार्यजी! यह पर्व हमें एक दूसरे से मिलने, एकजुट रहने का संदेश देता है।'' अनामिका बोली– ''हाँ बिलकुल ठीक।'' जिस प्रकार रावण, कंस का दंभ नहीं ठहर सका उसी तरह होली स्मरण दिलाती है कि हिरण्यकश्यपु का अभिमान भी अधिक दिन टिक नहीं सका। अत: इस पर्व से यह संदेश उभरता है कि छोटे–असहायों को भी स्वीकारें, उनके गले मिले, उनकी भरसक मदद करें। एक दूजे के रंग में इस तरह रंग जाएं जैसे पानी किसी भी रंग में मिलकर उसी रंग का हो जाता है।'' मनोज जी ने विस्तार से समजाया।

''आचार्यजी! होली खुशी, आनंद, उल्लास का पर्व है।'' तन्मय ने कहा। मनोज जी ने हामी भरी– ''हाँ सचमुच होली मन के आह्लाद का नाम है। आह्लाद में हम दूसरों की खुशियों का ध्यान रखेंगे तो यह और भी बढ़ जाएगा।''

''आचार्यजी क्या यह पर्व हमें पर्यावरण का संदेश नहीं देता?'' ललित ने पूछा। ''बिलकुल देता है। यह हमें स्मरण दिलाता है कि हम पर्यावरण की रक्षा करें, उसे सहेजे।'' संवारें ताकि टेसू–पलाश इसी तरह खिलते रहें।'' मनोज जी ने स्वीकारा। ''आचार्यजी क्या यह त्योहार हमें फूहड़ता छोड़ मर्यादा में रहने की चेतावनी नहीं देता।'' विनम्र ने

पूछा। ''अवश्य देता है। होली पर हमें मर्यादाओं का विस्मरण नहीं करना चाहिए। किसी भी प्रकार की फूहड़ता, अश्लीलता से बचा जाना चाहिए।'' मनोज जी ने समझाया।

''होली जलने से वातावरण में व्याप्त जीवाणुओं का दहन भी होता होगा।'' नलिनी ने जानना चाहा। ''होता है। होलिका दहन एक प्रकार का पर्व है जो सर्दी-गर्मी की ऋतु संधि में फैलने वाले चेचक, मलेरिया, खसरा तथा अन्य संक्रामक कीटाणुओं के विरुद्ध सामूहिक अभियान है। स्थान-स्थान पर प्रदीप्त अग्नि, सर्दी के मौसम में सूर्य की प्रखर उष्णता के अभाव से उत्पन्न रोग जीवाणुओं का संहार कर देता है।'' मनोज जी ने स्पष्ट किया।

''फिर तो आचार्यजी होलिका दहन से शरीर में उपस्थित जीवाणु भी समाप्त हो जाते होंगे?'' कनक ने पूछा। ''हाँ होलिका प्रदक्षिणा के मध्य ५०-६० डिग्री सेल्सियस तक का ताप, शरीर में उपस्थित जीवाणुओं को नष्ट करने में सहायक होता है। माना जाता है कि इससे शरीर शुद्ध होता है। तो बच्चों इस तरह की होली यदि मनाई जाए तो लाभ ही लाभ हैं और इसी में पर्व की सार्थकता भी।'' जाते-जाते मनोज जी सीख दुहरा गए।

– इन्दौर (म. प्र.)

एक हुए तो नेक हुए

लाल हरा और नीला पीला,
होली में सब एक हुए।
अलग-अलग भी सुन्दर थे पर,
एक हुए तो नेक हुए।।

कविता

कोयल

– चक्रधर शुक्ल

सबको सुबह जगाती कोयल,
मीठे भजन सुनाती कोयल।
वासंती मौसम में आती,
छत पर किसे बुलाती आती।

आमों के बागों में कूके,
खूब दशहरी खाती कोयल।

मीठे-मीठे बोल बोलकर-
सबका मन हरषाती कोयल।

कभी फुदकती इस-उस डाली,
ठुमरी, कजरी गाती कोयल।

सद्गुण वाले पूजे जाते,
जीवन-सार बताती कोयल।

– कानपुर (उ. प्र.)

रसोई घर में मनी होली

– डॉ. शील कौशिक

हमारे घर में जब भी दादाजी को सब्जी लाने के लिए कहा जाता है, तो उनकी बाँछें खिल जाती हैं। उन्हें खूब सारे फल–सब्जियाँ लाना पसंद है। माँ, दादाजी द्वारा लाई गई इतनी सारी सब्जियाँ–फलों को देखकर बहुत खुश होती है। वे उन्हें धो–पोंछकर करीने से फ्रिज में सजाती हैं। किन्तु दादाजी बुड़बुड़ाने लगती हैं कि कितनी बार समझाया है, इतनी सब्जियाँ फल एक साथ मत लाया करो, संभालना मुश्किल हो जाता है... चंदू की सब्जी–फलों की पूरी की पूरी दुकान ही उठा लाते हो।

इस पर मयंक दादाजी का पक्ष लेते हुए कहने लगा, ''दादीजी! चंदू काका की दुकान पर मैं भी गया था दादाजी के साथ। उनके यहाँ फल–सब्जियों इतनी अच्छी और ताजी थी कि देखकर सबकी सब खरीदने का मन कर आता है। और फिर दादी आपको पालक, बथुआ, मैथी पसंद है... मुझे बैंगन का भरता, शिखा को भिंडी और पेठा... पिताजी को कटहल, माँ को मटर, गाजर..... दादाजी को सलाद में प्रयोग की जाने वाली सभी चीजें खीरा, टमाटर, मूली पसंद हैं।''

''बस–बस रहने दे, दादाजी का चेला।''

मयंक अपने दादाजी के साथ पहली बार चंदू की दुकान पर गया था। इतनी सारी फल–सब्जियाँ देखकर वह आश्चर्य चकित रह गया। हमें तो विद्यालय में केवल चार–पाँच सब्जियाँ और फलों के नाम रट्टू तोते की तरह रटाए जाते हैं। उसने भी कभी ध्यान ही नहीं दिया कि माँ क्या बनाती हैं? वह जो भी बनाती हैं इतना स्वादिष्ट होता है कि हमें कभी पूछने की आवश्यकता ही नहीं पड़ी।

मयंक सोचने लगा चंदू की दुकान पर एक साथ रखी सब्जियाँ और फल ऐसे लग रहे थे जैसे होली के अलग–अलग रंग हों। लाल, पीली, हरी, बैंगनी, भूरे, काले, सफेद, जामुनी सभी रंग के फल और सब्जियाँ खरीदने से सजी थीं। ऐसे लगता था जैसे फलों और सब्जियों का इंद्रधनुष सजा हो। मयंक सोने से पहले रसोईघर में फ्रिज खोलकर सजी हुई सब्जियों को एक बार फिर देखना चाहता था। वह चुपके से रसोई में गया। उसने रसोईघर में रखे बर्तनों व अन्य खाने की चीजों के अतिरिक्त खाना बनाने में उपयोग होने वाले चकला, बेलन सभी पर अपनी दृष्टि जमाई। कितना कुछ होता है रसोईघर में। उसकी छोटी बहन शिखा बाजार से लाए खिलौने के सामानों से रसोईघर को सजाती है, असली रसोई में आकर तो कभी देखा ही नहीं।

मयंक को रसोईघर सचमुच खजाने जैसा

लगा। जहाँ माँ रोटी-सब्जी, दाल के अतिरिक्त अन्य खाने की स्वादिष्ट चीजें बनाती है। यह मयंक के लिए नया ज्ञान था।

रात के समय रसोईघर से आती आवाजें सुनकर मयंक रसोईघर में पहुँचा और वहाँ का दृश्य देखकर आश्चर्य चकित रह गया। सब्जियाँ फ्रिज से एक-एक कर बाहर आ चुकी थीं। सब अपनी-अपनी तरह मटककर, हंगामा मचा रही थीं। लंबी घीया पिचकारी की तरह सना-सना-सन छूटती हुई दूसरी सब्जियों की ओर चली। लाल-पीली होती शिमला केवल फुदक रही थी। अनार, चुकंदर लाल सुर्ख रंग बरसाने लगे और गालों पर गुलाब की तरह मलने लगे। पेठा ढोलक की तरह धड़कता धम-धम बजने लगा। जमीकंद तंबूरे की तरह बजने लगा। रसोई की स्लैब पर रखी थाली, चम्मच मंजीरे की तरह तथा क्वार्टर प्लेटें झांझ की तरह बजने लगी। तरबूज फटे ढोल-सा बजने लगा। बाकी फल-सब्जियाँ मिलकर बसंत बहार गाने लगी। शेष सब्जियाँ उछल-कूद कर, भांगड़ा करने लगी। लाइटर ने चिंगारी छोड़ी। ककड़ी एकतारा बन बैठी। छरहरे बदन वाली फलियाँ भरतनाट्यम करने लगी। चाय की प्यालियाँ जलतरंग बजाने लगी। सबका अजब-गजब रूप-रंग देखकर और संगीतमयी आवाजें सुनकर मयंक ठगा-सा रह गया।

''अरे बाप रे बाप! मैं तो अभी होली खेलने की योजना बना रहा था, ये तो सचमुच होली खेल रहे हैं।'' रसोईघर में होली का हुड़दंग मचा है। सब एक दूसरे के पीछे दौड़ रहे हैं। मयंक को मजा आने लगा। वह भी चिल्लाने लगा, मैं भी तुम्हारे साथ होली खेलूँगा... मैं भी.....।

''मयंक बेटा! होली परसों है। यह तू किसे कह रहा है। होली खेलने को? चल उठ! सूरज सिर पर चढ़ आया है और कितनी देर सोएगा।''

''माँ रसोई में...।''

''तेरा मन हर समय रसोई घर में बसा रहता है। चटोरा है तू! आज छुट्टी का दिन है, तेरा मन पसंद इडली, डोसा, सांभर बना रही हूँ।'' याहू! कहकर मयंक बिस्तर से कूदकर भागा।

- सिरसा (हरियाणा)

समरसता

ऊँच नीच, काले गोरे का,

जाति पांति का भेद नहीं।

होली का त्योंहार अनूठा,

समरसता में खेद नहीं।।

बाल साहित्य की धरोहर

बाल कविताओं के उस्ताद : दामोदर अग्रवाल

प्रस्तोता – डॉ. नागेश पांडेय 'संजय'

दामोदर अग्रवाल

दामोदर अग्रवाल जैसे रचनाकार दुनिया में कभी-कभार ही जन्म लेते हैं। वे नैसर्गिक रचनाकार थे। जो भी लिखा, अनूठा लिखा। उनकी अपनी गजब की शैली थी। किशोरों के लिए भी एक बड़े अभाव की पूर्ति करता उनका दमदार लेखन बाल साहित्य की धरोहर है। कहानियाँ तो उनकी सुन्दर हैं ही, पर बाल कविताओं के तो जैसे वे उस्ताद सरीखे थे।

दामोदर जी का जन्म उत्तर प्रदेश के वाराणसी जनपद में ब्रजभूषण दास और ब्रजरानी के पुत्र के रूप में ४ जनवरी १९३२ को हुआ था। वे दिल्ली के मोतीलाल नेहरु कॉलेज में अँग्रेजी के प्राध्यापक रहे। उनका अंतिम समय कर्नाटक में बीता। कैंसर जैसी असाध्य बीमारी के चलते १ जनवरी २००९ को बंगलौर में उनका देहांत हो गया। अपनी अप्रतिम और अजर कविताओं के बल पर वे बाल साहित्य के संसार में सदैव अमर रहेंगे। काव्य कृतियाँ : चल मेरी नैया कागज वाली, आजी की कहानी, हरियाले बाल गीत, बच्चों की १०१ कविताएँ के अतिरिक्त उनकी बाल कहानियों के संग्रह मास्टरजी ने बाल साहित्य जगत में खूब चर्चा पाई।

दामोदर जी का लेखन नयी सोच और रोचक कल्पनाओं से ओतप्रोत है। अलमस्ती उसकी विशेषता है। आइए, उनकी कुछ श्रेष्ठ रचनाओं का रसास्वादन करते हैं।

कहानी

मार्च का बुखार

''मार्च का महीना आते ही मुझे न जाने क्या हो जाता है। हाथ-पाँव फूलने लगते हैं। पसीना छूटने लगता है। भूख नहीं लगती, फिर भी घबरा-घबरा कर सारा दिन खाता ही रहता हूँ। किताबें डराने लगती हैं। शाला से भाग जाने को मन होने लगता है। मास्टरजी से कतराने लगता हूँ। पिताजी का सामना करना मुश्किल हो जाता है। पढ़ने में तेज साथियों से जलन होने लगती है। जी चाहता है फिर कहीं दूर निकल जाऊँ, या मुँह पर थप्पड़ मार लूँ। चिड़चिड़ाहट बनी रहती है। गधा कहीं का। गधा कहीं का। गधा कहीं का.....।''

और मनोहर अपनी डायरी में न जाने और कितनी बार 'गधा कहीं का' लिखता रहता, यदि उसका दोस्त मुरली अचानक न आ टपकता। मनोहर मन-ही-मन में बड़बड़ाया- कितनी बुरी आदत है, मुरली की। जब भी डायरी लिखने बैठता हूँ, वह धड़धड़ाता हुआ आ जाता है और ध्यान टूट जाता है। होगा पढ़ने-लिखने में तेज। लेकिन कुछ दूसरों का भी तो ध्यान रखना चाहिए उसे।

मनोहर अपनी कलम और डायरी एक ओर खिसका कर मुरली के पास दीवान पर बैठ गया और

बोला– ''कोर्स की किताबों के साथ झक मारते रहना मुझे अच्छा नहीं लगता। वही इतिहास–भूगोल, वही अँग्रेजी, वही गणित, वही साइंस... जी चाहता है कि सिर फोड़ लें।''

''सिर तो फोड़ ही रहा है, अपना। यह डायरी लिखना आखिर क्या है? मन का गुब्बार निकालना ही तो है। ला, देखूँ क्या लिखा है?'' और मुरली डायरी के पन्ने पढ़ने लगा। पढ़कर बोला– ''अरे! तू लिखता बहुत अच्छा है। किन्तु कुछ परीक्षा का भी तो सोच। अगले सप्ताह से शुरु हो रही है। नम्बर कम आए, तो लोगों से क्या कहेगा, माँ–बाप से क्या कहेगा?''

''यही तो रोना है।'' मनोहर बोला– ''परीक्षा क्या इसलिए पास किए जाते हैं कि लोगों को बताया जा सके, इसलिए नहीं कि श्रम का फल मिले, मन को संतोष हो, खुशी हो? इसीलिए तो मैं घबराता हूँ उससे।''

इतना कहने के बाद मनोहर एक बार फिर सोच में डूब गया। उसे फिर लगने लगा कि उसके हाथ–पाँव फूल रहे हैं। उसे मतली भी आने लगी। उठकर वाश–बेसिन तक गया और मुँह धोकर वापस आ गया। पर पसीना और घबराहट कम नहीं हुई। वह बोला– ''एक बात बता मुरली। यह सब तुझे क्यों नहीं होता? तू हँसता रहता है, परीक्षा के दिनों में भी निश्चिंत रहता है और परीक्षा की प्रतीक्षा ऐसे करता है, जैसे कोई मित्र आने वाला हो।''

मुरली इतने जोर से हंसा कि मनोहर को धक्का लगा और उसने अपना गुस्सा बहुत मुश्किल से रोका। हँसने के बाद मुरली बोला– ''जो रोग तुझे हो रहा है, वह तुझे इन्हीं दिनों में हर वर्ष होता है। उसका कुछ नाम है, जो मुझे अभी याद नहीं आ रहा। लेकिन तू शुरू से ही क्यों नहीं पढ़ता? परीक्षा धक्के देने लगते हैं, तब घबरा–घबरा कर इधर–उधर भागता और सिर पीटता है या डायरी लिखने बैठ जाता है।''

मुरली की यह बात मनोहर को अच्छी नहीं लगी। वह बोला– ''क्या डायरी लिखना बुरी बात है? इससे मन कितना हल्का हो जाता है।''

''बुरी बात नहीं है'' मुरली ने कहा– ''पर इसे किताबों से मुँह चुराने का बहाना नहीं बनाना चाहिए। लोग खेलते भी हैं, शाला के जलसों–समारोहों में भी भाग लेते हैं, पर किताबों से नाता नहीं तोड़ते। लेकिन तुम तो किताबों को मार्च में ही छूते हो, फिर भी उन्हें पढ़ने का साहस नहीं जुटा पाते। आखिर क्यों?''

यही तो प्रश्न है कि आखिर क्यों? मनोहर ने जैसे अपने आप से पूछा, और जब सिर उठाकर ऊपर देखा, तो मुरली दरवाजे के बाहर जा चुका था। उसे लगा जैसे वह नाराज हो गया है और यह सोचकर उसका दु:ख बढ़ गया। फिर वह उठा और एक तकिया उठाकर सोचने लगा–क्या इसे दीवार पर दे मारूँ? क्या इसे चींथकर फेंक दूँ, क्या गुलदान तोड़ दूँ? क्या किताबों के पन्नों की धज्जियाँ उड़ाकर आजाद हो जाऊँ?

तभी उसके मन में न जाने क्या कुछ घुमड़ने–सा लगा और उसकी हिम्मत टूटने–सी लगी। उसने जोर–जोर से चिल्लाना चाहा। पर चिल्लाने से क्या बनता है? उसके मन ने पूछा–अम्माजी आ जाएँगी। लोग आ जाएँगे और समझाने लगेंगे कि मैं बीमार हैं। वे मुझे ग्लूकोज पिलाने लगेंगे। संतरे का जूस पिलाने लगेंगे। नीबू चटाएँगे। कितना खराब लगता है, यह सब। फिर कहेंगे–मेंहनत कर बेटा, मेंहनत कर। किताबें पढ़। परीक्षा में प्रथम आना है। इंजीनियर बनना है, डॉक्टर बनना है। बड़ा आदमी बनना है। वगैरह वगैरह।

मनोहर के मन का बोझ बढ़ता गया। लगा जैसे उसके दिमाग की नसें फट जाएँगी। दाँत किटकिट करने लगे। जीभ सूखने लगी। पेट में मरोड़ होने लगी और वह डायरी लेकर एक बार फिर बैठ गया।

लेकिन उसके हाथ काँप रहे थे। कलम की पकड़ ढीली हो रही थी। अक्षर भी टेढ़े–मेढ़े बन रहे थे, पर मन में विचारों का तूफान था कि रुकता ही न था। उसके लिखा– ''परीक्षा... परीक्षा.... परीक्षा। जैसे मैं इसीलिए पैदा हुआ हूँ। डॉक्टर बनो... इंजीनियर

बनो.... अरे, यह क्यों नहीं कहते लोग कि नरक में जाओ.... वाह! क्या अच्छा विचार है, नरक में जाने का?''

नरक के विचार से उसका मन हल्का हो गया। आखिर कुछ लोग वहाँ भी तो जाते हैं, फेल होकर। आखिर जो पास नहीं होते, वे भी तो कुछ हो ही जाते हैं।..... और फेल होने के पक्ष में उसने न जाने कितने तर्क एकत्रित कर लिए। तुलसीदास किस शाला में पढ़े? कालिदास किस शाला में गए? शेक्सपियर ने कौन-सी परीक्षा पास की? क्या गौतम बुद्ध के कोई मास्टर जी थे? न्यूटन ने अपना सिद्धांत स्वयं ढूँढ़ा। और यह सब सोचकर मनोहर का मन एक बार फिर हल्का हो गया और उसने ठान लिया कि पुस्तकें नहीं पढ़नी हैं, तो डंके की चोट नहीं पढ़नी हैं और फेल होने में कोई लज्जा नहीं है।

फिर भी मनोहर को लग रहा था, जैसे उसके तर्कों में कहीं कोई भूल हो। यह सोचकर वह एक बार फिर बहुत परेशान हो उठा। रात को खाने पर बैठा, तो उससे कुछ खाया नहीं गया। उसकी माँ भाँप गई कि कुछ गड़बड़ है। कुछ तो वह समझती थी, क्योंकि मनोहर को यह हर वर्ष होता था, परीक्षा के आते ही। पर उसे लगा कि इस वर्ष रोग कुछ बढ़ा ही है। अगले वर्ष और बढ़ सकता है फिर उसके अगले वर्ष और। यह सोचकर वह मनोहर से बोली- ''ले, यह दूध पी ले, बेटे! बादाम डाले हैं, इसमें। दिमाग तर रहेगा इनसे और पढ़ाई में मन लगेगा।''

माँ की बात सुनकर वह एक बार फिर परेशान हो उठा। ''पढ़ाई! पढ़ाई! पढ़ाई!'' वह जोर से चीखता हुआ बिना खाए उठ गया। माँ बेचैन हो गई, पर कुछ बोली नहीं। पिता भी सहम कर रह गए। घर का वातावरण बिगड़ गया।

तभी मनोहर की छोटी बहन मानिनी उसकी डायरी उठा लाई और एक पन्ना खोलकर माँ-बाप को सुनाती हुई जोर-जोर से पढ़ने लगी।

उसमें लिखा था- ''माँ-बाप कहते हैं, पढ़ो! साथी कहते हैं, पढ़ो! मास्टरजी कहते हैं, पढ़ो! लेकिन दूरदर्शन वाले कहते हैं, रात को जागो और फिल्में देखो। क्यों वे बेवकूफ हैं? उस रात अम्मा-बाबा मेरठ गए हुए थे। मैंने फिल्म देखी... बड़ा आनन्द आया। रात को ढाई बजे सोया, तो गहरी नींद आई।''

मनोहर के पिता ने जब उसका लिखा यह सब सुना, तो गहरे सोच में पड़ गए। वह उसके कमरे की ओर बढ़े, पर वह उसे अंदर से बंदकर लाइट बुझा चुका था।

रात को कोई डेढ़ बजे उसके जोर-जोर से रोने की आवाजें आने लगी। माँ-बाप जाग गए। मनोहर ने बड़ी मुश्किल से दरवाजा खोला। वह हुचुक-हुचुक कर रोए चला जा रहा था। उल्टियाँ भी आ रही थीं। माँ ने हाथ पकड़ा, तो वह बहुत गरम था। उसे सचमुच बुखार था। बड़ी मुश्किल से उसका रोना बंद हुआ, तो माँ ने पूछा- ''क्या हुआ?''

पहले तो उसने सोचा कि चुप ही रहूँ। लेकिन फिर बोला- ''बहुत ही खराब सपना आ रहा था। देखा कि शाला के हॉल में बैठा हूँ। परीक्षा का पर्चा सामने है,

पर मेरी आँखों की ज्योति चली गई है और मैं कुछ भी नहीं देख पा रहा हूँ। फिर देखा कि ज्योति आ गई है पर सवाल समझ में नहीं आ रहे हैं। फिर न जाने क्या-क्या देखा लिखा नहीं जा रहा... फेल हो गया हूँ। दूसरे लड़के पास हो गए हैं। हँस-बोल रहे हैं। मैं कोने में खड़ा रो रहा हूँ... फिर भागता हूँ.... भागता हूँ.... भागता हूँ..... और कुतुबमीनार से भी ऊँची किसी इमारत से....'' और वह दहाड़ मारता हुआ एक बार फिर जोर-जोर से रोने लगता है, अपनी माँ से लिपट कर। माँ की भी आँखें भर आई।

किसी तरह रात कटी। मनोहर को अभी भी उबकाइयाँ आ रही थीं और बुखार भी था। उसे डॉक्टर के पास से जाया गया। डॉक्टर ने सारी बातें सुनने के बाद उसे दवा दी, और बोला- ''दो-तीन दिनों में सब ठीक हो जाएगा, उसके बाद इसे लेकर फिर आइए। तब और बातें करेंगे।''

दो-तीन दिनों में ही मनोहर ठीक हो गया और उसने अपनी डायरी में लिखा- ''मैं जानता हूँ कि यह कोई बीमारी नहीं थी, केवल डर था, परीक्षा का डर,

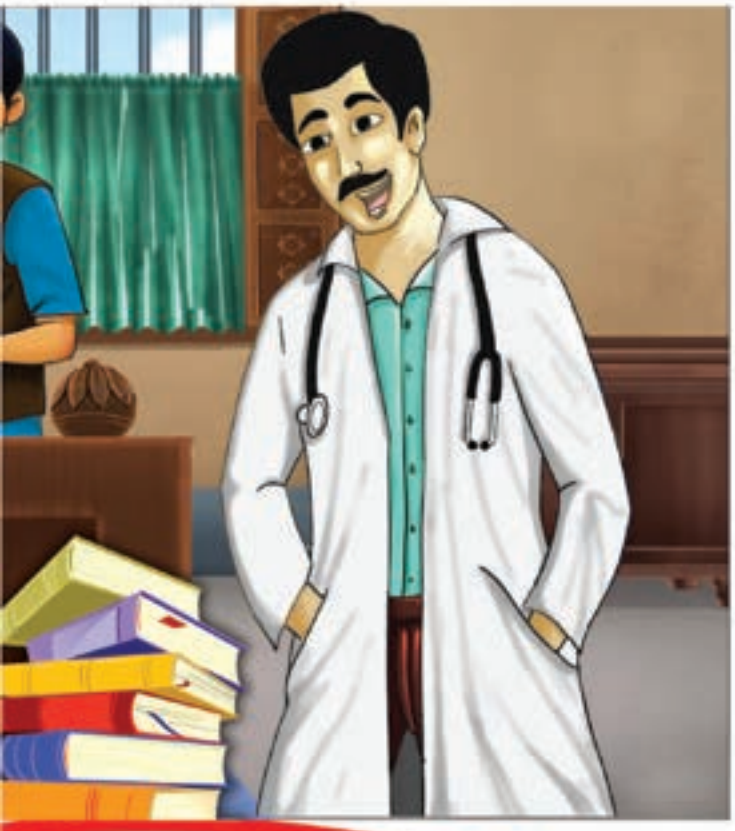

जो बीमारी बनकर मेरे तन-मन में घुस गया था। इसका उपचार डॉक्टर की दवा नहीं है वह तो केवल दर्द दूर करती है। इसका उपचार है, डर को दूर भगाना मेंहनत करके।'' यह लिखने के बाद मनोहर उठा, जैसे उसने कोई संकल्प किया हो।

तीन दिन के बाद उसके माँ-बाप उसे लेकर डॉक्टर के पास फिर गए और पूछा- ''डॉक्टर साहब इसे हुआ क्या था?''

डॉक्टर ने जवाब दिया- ''इसको एक आम बीमारी हो गई थी। परीक्षा के दिनों में यह स्कूली बच्चों को अक्सर हो जाती है। इसका नाम है- एक्जामिनेशन फीवर।''

''कैसे बचा जा सकता है, इससे डॉक्टर साहब?'' मनोहर ने पूछा।

''एक ही तरीका है।'' डॉक्टर ने कहा- ''स्कूल खुलते ही पढ़ाई में नियमित हो जाओ। जो रोज पढ़ाया जाता है, उसे उसी रोज पूरा-पूरा समझ लो।''

''लेकिन इसकी कोई दवा भी तो होगी?'' पिता ने पूछा।

''दवा तो तब होती है, जब यह रोग शरीर को पकड़ने लगे।'' डॉक्टर ने कहा।

''ठीक है। मैं समझ गया। धन्यवाद, डॉक्टर साहब!'' इतना कहकर मनोहर अपने माँ-पिताजी के साथ उठकर डिस्पेंसरी से बाहर आ गया। घर पहुँच कर उसने सबसे पहले अपनी डायरी खोली और उसमें लिखा- ''एक बुखार और होता है, जिसे मार्च महीने का बुखार कहते हैं। इसकी दवा मार्च में नहीं होती, जब बुखार चढ़ने लगता है। इसकी स्कूल खुलते ही शुरू करनी चाहिए, जब पढ़ाई शुरू होती है। उस दवा का नाम है- पुस्तक-प्रेम''

डायरी बंद करके वह उठा और सीधे मुरली के घर गया। वह कमरे में बैठा पढ़ रहा था। वह भी वहीं बैठकर पढ़ने लगा। उसका डर गायब हो चुका था।

मना है

खूब कूदो, खूब खेलो, हाथ में संसार ले लो।
किन्तु इसका ध्यान रखना, घास पर चलना मना है।

पर्वतों तक चढ़ चलो तुम,
आसमां तक बढ़ चलो तुम!
तितलियों के पर कतरकर,
हाथ से मलना मना है।

फूल सपनों के चुनो तुम, गीत परियों के सुनो तुम।
पर उन्हें असली समझकर, स्वयं को छलना मना है।

सुबह ही लाली लुटे जब,
पेड़ की ताली बजे जब।
बिस्तरे में मुँह छिपाकर,
नींद में ढलना मना है।

राह अपनी खुद बनाना, चाह का पौधा लगाना।
श्रम करो खुद, दूसरों को, देखकर जलना मना है।

क्या मजे से

आ रहे हैं क्या मजे से, जा रहे हैं क्या मजे से।
लादकर धोबी की लादी, ला रहे हैं क्या मजे से।

है न इनकी माँग कोई,
हैं न रचते स्वांग कोई।
मिल गया जो सुर उसी में,
गा रहे हैं क्या मजे से।

बोले हैं ढेंचू-ढेंचू, नाम इनका तान खेंचू।
देखिए वो दुम हिलाते, जा रहे हैं क्या मजे से।

जानते हैं बोझ सहना,
मानते मालिक का कहना।
आँख से चुपचाप जल,
बरसा रहे हैं क्या मजे से।

दिन में अपना काम करते, रात में आराम करते।
पाठ धीरज का खड़े, सिखला रहे हैं क्या मजे से।

बड़ी शरम की बात

बड़ी शरम की बात है बिजली,
बड़ी शरम की बात।
जब देखो गुल हो जाती हो,
ओढ़ के कंबल सो जाती हो।
नहीं देखती हो यह दिन है,
या यह काली रात है।
बिजली बड़ी शरम की बात,
बड़ी शरम की बात है बिजली,
बड़ी शरम की बात।

हम गाना गाते होते हैं,
या खाना खाते होते हैं,
पता नहीं चलता थाली में,
किधर दाल औ भात,
है बिजली बड़ी शरम की बात,
बड़ी शरम की बात है बिजली,
बड़ी शरम की बात।

जाओ मगर बता के जाओ,
कुछ तो शिष्टाचार दिखाओ,
नोटिस दिए बिना चल देना,
तो भारी उत्पात।
बिजली बड़ी शरम की बात।
बड़ी शरम की बात है बिजली,
बड़ी शरम की बात।

– शाहजहाँपुर (उ. प्र.)

SURYA FOUNDATION

B-3/330, Paschim Vihar, New Delhi - 110063, Tel. : 011-25251588, 25253681
Email : interview@suryafoundation.org Website : www.suryafoundation.org

सूर्या फाउण्डेशन युवाओं के समग्र विकास तथा प्रशिक्षण के लिए अब एक जानी-मानी संस्था बन चुकी है। इसका प्रमुख उद्देश्य है देश के निष्ठा रखते हुए अनेक तरह के उत्तरदायित्व निभाने के लिए तेजस्वी, लगनशील तथा धुन के पक्के नवयुवकों का निर्माण करना और उन्हें समाजसेवा के काम में जोड़ना।

इन्टरव्यूमेंचयनहोजानेकेबादसूर्यासाधनास्थलीके पसमेछ:माहकीट्रेनिंगदीजाएगी।उसकेबादएकसालकेलिएOn Job Training (OJT) रहेंगी।

संघ केसंस्कारोंमेंपले-बढ़े,सामाजिककार्योंमेंरुचिरखनेवाले,शारीरिकरूपसेसक्षमयुवकोंकेसूर्याफाउण्डेशनमेंप्रवेशहेतुनिम्नcategoriesमें इंटरव्यूहोगा–

Post	Experience	Age Between	6 months Initial Training + 1 year OJT	After Training CTC
CA	IPCC / MTER	18-25	3 - 4 L Per Annum	As per Performance
	Fresher	22-30	5 - 6 L Per Annum	- do -
	Experienced (upto 5 years)	25-35	6 - 8 L Per Annum	- do -
	Experienced (above 5 years)	25-35	9 - 12 L Per Annum	-do -
Engineers, Fresher & Experienced	B.Tech (IIT)	22-30	7.5 - 9 L Per Annum	- do -
	B.Tech (NIT)	22-30	4.5 - 6 L Per Annum	- do -
	B.Tech (Other Institutes)	22-30	3 - 3.6 L Per Annum	- do -
	M.Tech (IIT)	22-30	8.5 - 10 L Per Annum	- do -
	M.Tech (NIT)	22-30	5.5 - 7 L Per Annum	- do -
	M.Tech (Other Institutes)	22-30	3.6 - 4 L Per Annum	- do -
MBA	MBA (IIT + IIM)	22-30	15 L + Per Annum	- do -
	MBA (IIM)	22-30	12 - 15 L Per Annum	- do -
	MBA (Other Institutes)	22-30	3 - 3.6 L Per Annum	- do -
Post Graduate & Graduate	MCA, B.Ed., M.Ed., MSW, M.Sc., M.Com., M.A. *(Freshers / Experience) Ph.D. **	18-25	2.4 - 3 L Per Annum	- do -
	Mass Communication (Media) - PG	18-28	2.4 - 3 L Per Annum	- do -
	B.Com. with three years experience in accounts, purchase, store	18-28	3 L Per Annum	- do -
	B.Sc, BCA, BBA, BA, B.Com.(Persuing / Passed)	18-25	1.4 - 1.8 L Per Annum	- do -
	Diploma		1.8 L Per Annum	- do -
Law	LLM	22-28	3 - 3.6 L Per Annum	- do -
	LLB	22-28	2.4 - 3 L Per Annum	- do -

- Categoriesमेंअधिकप्रतिभाशालीछात्रोंकोइससेभीअधिकवेतनदेसकतेहैं।
- *** Ph.D. candidates भी आवेदन कर सकते हैं। Salary interview के दौरान तय होगी।**
- **योग शिक्षक, प्राकृतिक चिकित्सक / उपचारक, Karate Teacher, Music Teacher, Stenographer (Hindi & English), Script Writer (Hindi & English), Data Operator & Clerk, Editor & Co-Editor, नाट्य, संगीत एवं नृत्यकला के विसारद भी आवेदन कर सकते हैं। वेतन योग्यता अनुसार दिया जाएगा।**

- **Graduate Management Trainee (GMT)**

  योग्यता–2024में10वीं,11वींया12वींकीपरीक्षापासकरनेवालेभीआवेदनकरसकतेहैं।पिछलीकक्षामेंन्यूनतमअंक60%तथागणितमें75%अंकप्राप्त किएहों।आयु:18वर्षसेकम।सूर्याट्रेनिंगसेंटरमें6माहकीप्रारंभिकट्रेनिंगकेबादOn Job Training (OJT) मेंभेजाजायेगा। OJT केसाथ-साथ ग्रेजुएशनऔरMBA या MCA करनेकीसुविधादीजाएगी।प्रारंभिक6महीनोंकीट्रेनिंगकेदौरानभोजनऔरआवासकीसुविधामुफ्तरहेगी,साथही5,000/- प्रतिमाहस्कॉलरशिपमिलेगा।On Job Training केदौरानआवासतथापढ़ाईकेसाथ-साथ11वींमें8000/-,12वींमें10,000/-Graduation I year में 12,000/- II nd Year में15,000/- III rd Year में18,000/- MBA/MCA I Year में22,000/- MBA/MCA II nd Year में27,000/-Stipend प्रतिमाह मिलेगा।MBA/MCA पूराहोनेकेबाद40000/-औरWork Performance केआधारपरप्रतिमाहवेतन/मानधनइससेअधिकभीहोसकताहै।

आवेदन हिंदी या अंग्रेजी में ही भरकर भेजें। विस्तृत बायोडाटा के साथ-साथ यदि आपने NCC / NSS / संघशिक्षावर्ग/प्राथमिकशिक्षावर्ग /सीओटीसी/ PDC आदिकोई शिविरकियाहैतोउल्लेखकरें।सेवाभारती/विद्याभारती/वनवासीकल्याणआश्रमकेकिसीविद्यालय/छात्रावासयासंस्थापरिषदअथवाविविधक्षेत्रोंसेसंबंधरहाहैतोकबऔर कैसे।सूर्यापरिवारमेंकोईपरिचितहोतोउनकानाम,विभागभीअवश्यलिखें।पढ़ाईकाविवरणलिखतेहुए,Mark sheetकीफोटोकॉपीसाथजोड़ें।

कृपया विस्तारपूर्वक बायोडाटा के साथ निम्नलिखित पते पर अपना CV / आवेदन भेजें। CV / आवेदन Email से भी भेज सकते हैं।

B-3/330, Paschim Vihar, New Delhi - 110063 | Email : interview@suryafoundation.org

आवेदन की अंतिम तिथि : 30 अप्रैल 2024

विदेशों में भी मनाई जाती है होली

– राजकुमार जैन

आपको यह जानकर निश्चय ही आश्चर्य की अनुभूति होगी कि रंगों का रंगीला पर्व होली केवल हमारे देश भारत में ही नहीं, अपितु विदेशों में भी मनाया जाता है। हाँ, विदेशों में होली मनाने के रंग-ढंग हमसे कुछ भिन्न जरूर हैं, किन्तु वहाँ पर भी उसी उत्साह व उमंग से होलियाँ मनाई जाती हैं। आइए, आपसे होली के मौके पर अन्य देशों में मनाई जाने वाली होलियों की जानकारी दें।

सबसे पहले आपको लिए चलते हैं **फ्राँस** में। फ्राँस के लोग बेहद उत्साह से होली मनाते है। इस दिन फ्राँसीसी लोक काफी हुड़दंग मचाते हैं और एक-दूसरे पर रंग-बिरंगे गुलाल और रंग मलते हैं। प्रतिवर्ष १३ अप्रैल को मनाये जाने वाले इस त्योंहार को फ्राँस में 'मूर्खों का त्योंहार' कहा जाता है। वहाँ जो भी होली के हुड़दंग से बचने की कोशिश करता है, उसका मुँह सभी हुड़दंगी मिलकर काला कर देते हैं और उसके सिर पर नकली सींग लगाकर उसे भैंस की आकृति दी जाती है। फिर उसे सारे बाजार में घुमाया जाता है। इससे एक दिन पहले घास-फूस की बनी मूर्तियों को सारे दिन नगर में घुमाकर साँझ को उन्हें जला दिया जाता है।

इटली में होली का प्रतिरूप त्योंहार 'बेलियाकोनोन्स' के नाम से मनाया जाता है। इस दिन छोटे-बड़े सभी एक-दूसरे पर सुगंधित जल छिड़कते हैं और उन्हें घास के बने आभूषण भेंट करते हैं। यहाँ पर होली काफी शालीनता से मनाई जाती है। अन्न की देवी 'फ्लोर' को खुश करने के वास्ते तथा खेती की उन्नति के लिए शाम को बिल्कुल भारत की तरह इटली के लोग लकड़ियाँ एकत्र कर जलाते हैं और अग्नि के आस-पास नाचते-कूदते हैं। इस मौके पर आतिशबाजी करने की प्रथा भी यहाँ प्रचलित है।

चेकोस्लावाकिया में होली को 'बेलियाकोनोन्स' के नाम जाना जाता है। यहाँ पर इस दिन लोग भारत की ही तरह एक-दूसरे पर रंग छिड़कते हैं और गुलाल मलते हैं। इस मौके पर नाच-गाना भी होता है।

अफ्रीका में मार्च-अप्रैल के मध्य मनाया जाने वाला त्योंहार 'आमेना वेका' भारतीय होली का मिलता-जुलता रूप है। यहाँ पर 'वोंगा' नामक एक अत्याचारी राजा का पुतला जलाया जाता है। इस संबंध में यह मान्यता प्रचलित है कि 'वोंगा' नामक एक अत्याचारी राजा को प्रजा ने जलाकर मार डाला था। तब से प्रतिवर्ष उसी ढंग से वोंगा का पुतला बनाकर जलाया जाता है और खुशियाँ मनाई जाती है। यह कथा भारत में प्रचलित हिरणाकश्यप की कथा से मिलती-जुलती है। दूसरे दिन कुछ अफ्रीकी क्षेत्रों में एक-दूसरे पर रंग छिड़के जाते हैं।

अमेरिका में एक त्योंहार मनाया जाता है-

'होबो'। होबो के दिन दुनिया-भर का फूहड़पन अमेरिका में देखा जा सकता है। उस दिन होबो बने लोगों की एक सभा होती है। उस सभा में जाने के लिए जो पोशाक पहनी जाती है, उसमें किसी की पतलून की एक टांग गायब तो किसी ने शर्ट के बटन पीछे की ओर लगाकर पहना होता है। किसी के एक पैर में जूता है तो दूसरे पैर में चप्पल। चेहरे पर ऐसा मेकअप किया जाता है कि स्वयं होबो के घरवाले भी पहचान न पाएँ। इस सभा में जो सर्वाधिक बेहूदगी करता है, उसकी प्रशंसा की जाती है और उसे अन्य होबोओं द्वारा पुरुस्कृत भी किया जाता है। अमेरिका में ही ३१ अक्टूबर को 'हेलाईन' नाम से रंगों का त्योंहार भी पूरे उत्साह पर उल्लास से मनाया जाता है।

यूनान में 'मेपोल' नाम से एक त्योंहार मनाया जाता है। इस उत्सव में एक खम्भा गाड़ा जाता है और उसके आस-पास ढेरों लकड़ियाँ एकत्र कर रात के समय उनमें आग लगा दी जाती है। इस दिन लोग अपने देवता 'डायनोसिय' की पूजा करते हैं।

रूस में ३१ मार्च के दिन हर साल 'हास्य-पर्व' मनाया जाता है। इस दिन यहाँ भारत सरीखे महामूर्ख

सम्मेलन इत्यादि आयोजित किए जाते हैं।

पौलेण्ड के लोग 'आरशिना' नामक त्योंहार होली की भाँति ही मनाते हैं। यहाँ लोगों की टोलियाँ इस दिन एक-दूसरे पर फूलों से निर्मित रंग डालती हैं और आपस में गले मिलती हैं। मिस्र में भी मार्च माह में होली की तरह ही एक त्योंहार मनाया जाता है, जिसमें रंगों का भरपूर उपयोग होता है। यहाँ इसे 'फलिका' नाम से जाना जाता है।

थाईलेण्ड में इसे 'सांग्क्रान' कहा जाता है। अप्रैल माह में मनाए जाने वाले इस त्योंहार में लोग एक-दूसरे पर सुगंधित जल डालते हैं व बौद्ध भिक्षुओं को भेंट देते हैं।

भारत के पड़ोसी देश **बर्मा** में होली को 'तेच्या' कहा जाता है। यहाँ यह पर्व चार दिन तक मनाया जाता है। इन चार दिनों में बच्चे-बड़े सभी राह चलते लोगों पर पिचकारियों से रंग फेंकते हैं। इस पर्व के अवसर पर एक दिन का राष्ट्रीय अवकाश भी होता है। पड़ोसी देश **श्रीलंका** में भी भारत के तौर-तरीकों से होली मनाई जाती है। वहाँ के लोग रात में 'होलिका-दहन' करते हैं और दूसरे दिन रंग-गुलाल भी खेलते हैं।

चीन में लोकप्रिय पर्व 'च्वेजे' के दिन से एक पखवाड़े तक खुशियाँ मनाई जाती हैं। वहाँ यह पर्व बसंत के बाद प्रारंभ होता है और हर चीनी उसमें बड़े उमंग से भाग लेता है।

जर्मनी में ईस्टर के दिन बच्चे लकड़ियाँ एकत्र कर उसमें आग लगा देते हैं। बच्चे और युवक आपस में रंग भी खेलते हैं।

इन देशों के अलावा भी विश्व के अन्य अनेक देशों में अलग-अलग अंदाज से होली मनाई जाती है। सचमुच यह जानना कितना रुचिकर है कि होली एक वैश्विक त्योंहार है।

- भवानीमण्डी
(राजस्थान)

दादी का दवाखाना

– मदन मोहन 'अरविन्द'

रामेश्वर दयाल अपनी कारोबारी आवश्यकताओं के कारण से दूर शहर में आकर रहने तो लगे थे, लेकिन अपने गाँव से उनका जुड़ाव आज भी कम नहीं हुआ था, मन में सदा एक ही इच्छा रहती थी कि उनकी तरह उनके बच्चों की जड़ें भी अपने गाँव की माटी से जुड़ी रहें, यही सोचकर आज वह अपनी पत्नी मीना और दोनों बेटों नीरज तथा धीरज को साथ लेकर होली का त्योंहार मनाने गाँव जा रहे थे।

शहर से निकलकर गाँव की ओर मुड़ते ही बच्चे रास्ते की हरियाली और दूर-दूर तक फैले खेतों को देखकर खुश होने लगे। होली इस बार मार्च महीने के अंत में ही पड़ रही थी इसलिए कहीं सरसों के फूलों की पीली चादर तो कहीं गेहूँ की हरी- सुनहरी बालियाँ बच्चों को लुभा रही थीं। लम्बी-लम्बी पगडण्डियों से गुजरकर घर की ओर बढ़ रहे थे कि राह में एक बड़े से डण्डे पर लाल सा झण्डा लहराता दिखाई दिया, डण्डे के चारों ओर अच्छे-खाते कूड़-कबाड़ के साथ-साथ उपलों और लकड़ियों के ढेर भी दिखाई दे रहे थे। बड़े बेटे नीरज ने पूछा- ''पिताजी! यह ढेर किसलिए इकट्ठा किया हुआ है और इसके बीच में झण्डा लगाने का अर्थ क्या है?''

''बेटा! यह होलिका है, होली वाले दिन गाँव वाले इकट्ठा होकर आग लगा देंगे।'' रामेश्वर दयाल ने बताया।

''ऐसा क्यों किया जाता है पिताजी! नीरज ने फिर पूछा।

''इसके पीछे दो बातें हैं बेटा! पहली एक कहानी।''

''कौन-सी कहानी?'' कहानी की चर्चा आते ही रामेश्वर दयाल को बीच में टोकते हुए दोनों भाइयों ने एक स्वर में कहा- ''कहानी सुनाइये न पिताजी!''

''सुनो बच्चो! पुराने समय में राक्षसों का एक राजा था हिरण्यकश्यपु, जो अपनी जनता को हमेशा सताता रहता था, किन्तु उसका पुत्र प्रह्लाद उसके ऐसे दुष्कर्मों का विरोध किया करता था। इस बात से क्रोधित होकर हिरण्यकश्यपु ने प्रह्लाद को मृत्युदण्ड देने का निश्चय कर लिया।''

''फिर क्या हुआ।''

''हिरण्यकश्यपु की एक बहन थी होलिका, जिसे वरदान मिला हुआ था, आग उसे जला नहीं सकती थी। एक दिन प्रह्लाद को उसकी बुआ होलिका की गोद में धोखे से बिठा कर आग के हवाले कर दिया गया, ताकि प्रह्लाद जलकर मर जाय और होलिका सही सुरक्षित बच निकले।''

''फिर तो प्रह्लाद का शरीर राख हो गया होगा पिताजी और होलिका बुआ जीवित बच गई होगी?'' छोटा भाई धीरज बीच में बोल उठा।

''नहीं धीरज! हुआ इसका ठीक उलटा,

होलिका जल गई और प्रह्लाद का बाल बाँका भी नहीं हुआ।''

''ऐसा क्यों? वरदान का क्या हुआ?'' इस बार नीरज ने अचम्भित स्वर में पूछा।

''किसी अच्छे-सच्चे, निर्दोष या निर्बल को जलाने की कोशिश करने वाला अपनी आग में स्वयं ही जल जाता है बेटे! उसे वरदान भी नहीं बचा पाते।''

''ओह.....'' दोनों भाइयों के मुँह से अचानक एक ही आवाज एक साथ निकली।

''आया समझ में, बुराई पर अच्छाई की जीत की इस याद को हम सभी आत तक होलिका दहन के रूप में मनाते हैं, यह हुई पहली बात।'' रामेश्वर दयाल बोले।

''और दूसरी बात पिताजी?'' इस बार बड़े भाई नीरज ने पूछा- ''तुम देख रहे हो नीरज! झण्डे के आसपास कूड़े-कबाड़े के कितने ढेर लगे हैं, सारे गाँव का कूड़ा-कचरा इधर जमा हो गया है जो होली वाले दिन फूँक दिया जाएगा इस तरह सारे गली चौराहे गन्दगी

मुक्त हो जाएँगे। होलिका दहन इस रूप में हर वर्ष चलाया जाने वाला स्वच्छता अभियान भी है जिसे हम त्योंहार की तरह मनाते हैं। यह हुई दूसरी बात, समझे बेटा?'' पिताजी ने दोनों से पूछा। दोनों ने हाँ में सर हिलाया।

बातों-बातों में कब घर आ गया किसी को पता ही नहीं चला। गाँव के घर की बात ही कुछ और थी। चारों ओर बड़े-बड़े कमरे, बीच में लम्बा-चौड़ा आँगन, आँगन में छायादार नीम का पेड़ और तुलसी का पौधा। दोपहर होने वाले थी, आँगन में ही सारा परिवार होली की तैयारियों में लगा था। रामेश्वर दयाल ने घर में प्रवेश करते ही माँ और सुनीता भाभी को प्रणाम करते हुए उनके चरण छूकर ढेर सारे आशीर्वाद प्राप्त किए, नीरज ने पैर छुए तो दादी ने उसे प्यार से गोद में उठाकर सीने से लगा लिया, छोटा धीरज भी अपनी ताई की गोद में खुश हो रहा था। इधर आँगन की धूप में एक तरफ चटाई पर सफेद गोलियाँ सी सूखते देखकर नीरज ने दादी से पूछा- ''दादी माँ! यह पकौड़े सफेद कैसे हो गए और इन्हें चटाई पर क्यों डाला हुआ है?''

नीरज के भोलेपन पर हँसी से लोटपोट होती दादी माँ ने बताया- ''यह सफेद पकौड़े नहीं, इन्हें 'कुरैरी' कहते हैं। स्वाद में नमकीन होती हैं, चावल से बनती हैं इसलिए सफेद हैं। सूखकर सिकने के बाद बहुत करारी लगती है। शायद इसीलिए इनका नाम कुरैरी पड़ा होगा।''

''उधर कड़ाही में तो कुछ सफेद और गीला-गीला सिक रहा है। यह तो पक्के सफेद पकौड़े ही होंगे दादी माँ।'' छोटे धीरज ने चतुराई दिखाई तो इस बार सभी ठहाके लगाकर हँसने लगे, धीरज सबको अचरज भरी नजरों से देखे जा रहा था।

''नहीं, यह चावल से बनने वाली एक मिठाई है इसका नाम है 'हिस्से'। होली पर घरों में विशेष तौर से बनाई जाती है।'' माँ ने धीरज के सर पर हल्की-सी चपत लगाते हुए समझाया।

दोनों भाई होली पर आँगन में बन रहे तरह-तरह के पकवानों को देखकर आश्चर्यचकित हुए जा रहे थे।

गुड़िया के अलावा दूसरे सारे पकवान वे आज पहली बार देख रहे थे। तैयारियाँ होते-होते शाम हो आई। सबने साथ बैठकर भोजन किया और सोने की तैयारी करने लगे। दादी माँ ने एक बड़ा-सा कमरा खोलकर उसमें खूब सारी नीम की पत्तियाँ जला दीं। थोड़ी देर तक बहुत धुआँ होता रहा, लेकिन अब कमरे में एक भी मच्छर नहीं था। दादी माँ का यह कमाल भी नीरज-धीरज को फिर से चकित कर गया।

कुछ ही समय बीता होगा, नीरज थोड़ा परेशान दिखाई देने लगा। अँधेरा घिर आया था। नीरज की आँखें लाल होने लगीं। सर दर्द करने लगा और नाक बहने लगी। माँ ने देखा तो चिन्तित होने लगी। तभी घूमती-फिरती दादी माँ कमरे की तरफ आ निकली। नीरज की हालत बिगड़ती देखी तो तुरन्त वापस निकल गई। जब लौटीं उनके हाथ में एक पान का पत्ता थोड़ी सी अजवाइन और एक चम्मच था।

दादी ने फुर्ती से पान के पत्ते में अजवाइन रखकर दोनों को कूटकर रस को चम्मच में छाना। वहीं उपले की आग मँगाकर उस रस को थोड़ा गुनगुना किया और नीरज को पिला दिया। दादी तब तक उसके सर पर प्यार से हाथ फिराती रही जब तक नीरज सो नहीं गया। रामेश्वर दयाल ने देखा था रात में माँ कई बार चुपके से झाँककर नीरज का हाल देखकर गई थी। सुबह आकर उन्होंने ही नीरज को जगाया। कमाल हो गया। नीरज अब एकदम चुस्त-दुरुस्त लग रहा था।

होलिका दहन का समय हुआ तो गाँव के लोग मिलकर होली जलाने के लिए वहीं इकट्ठे होने लगे जहाँ झण्डा लगा हुआ था। नीरज और धीरज भी पिताजी के साथ आये थे। होली जलाई गई। फिर उसी की लपटों में गाँव वालों ने जौ की बालियाँ भूनीं। सब लोग अपने से बड़ों का अभिवादन करते हुए। मित्रों से गले मिलते हुए। और जौ की भुनी बालियाँ एक-दूसरे को देते हुए गाँव की ओर वापस लौट रहे थे। धीरज थोड़ा अस्वस्थ लग रहा था। उसे उबकाई आ रही थी। घर तक आते-आते उसका पेट फूलने लगा था। रात होते-होते पेट में तेज दर्द भी होने लगा। सब चिन्तित होने लगे। गाँव में न कोई डॉक्टर न दवाखाना। दादी माँ को याद आया धीरज दोपहर के समय उनसे कुछ पैसे लेकर बाजार की ओर गया था। अवश्य कुछ उलटा-सीधा खाया होगा।

''दोपहर में क्या खाया था धीरज?'' दादी माँ ने पूछा।

''चाउमीन दादी माँ!'' धीरज ने डरते हुए कहा।

दादी माँ कुछ बोलो नहीं। धीरज को अपने साथ अपने कमरे में ले गईं। कुछ खट्टा-सा खाने को दिया और बातों में उलझा कर अपने साथ ही सुला लिया। धीरज सुबह जब जागा तब उसे जोरों से भूख लगी हुई थी। पेटदर्द बिल्कुल गायब।

''माँ जी! कमाल हो गया। कौन-सी दवा दी थी अपने दवाखाने से?'' धीरज की माँ मीना ने अचानक प्रश्न किया।

''कुछ खान नहीं बेटा! बस नीबू का पुराना अचार खिलाया था इसे। आजकल के बच्चों का खानपान बहुत बिगड़ रहा है। देख लो कल चाऊमीन खाने का फल इसे भी भुगतना पड़ गया।'' दादी माँ ने हँसते हुए कहा। सारा परिवार धीरे-धीरे फिर होली की मस्तियों में रमने लगा।

रामेश्वर दयाल टेसू के फूल लेकर आये थे। उनकी भाभी ने फूलों को उबाल कर, छानकर उनसे निकाला हुआ एकदम खुशबूदार रंगीन जल बाल्टियों में भर लिया था। कुछ सूखे रंग भी तश्तरियों में सजा कर रख दिये थे। एक मेज पर नमकीन पापड़, कुरैरी के साथ चावल से बने मीठे करारे हिस्से तथा गुझिया भी रखे हुए थे। लोग आते, गुलाल लगाते और सभी आगन्तुकों को सत्कार इस नमकीन, मिठाई के अलावा विशेष ठण्डाई और काँजी से किया जाता। नीरज-धीरज भी सबके साथ पहली बार होली के इस आनन्द अनुभव कर रहे थे। अगली सुबह सबको शहर वापस जाना था। लेकिन उस रात नीरज और धीरज मीना से पूछ रहे थे- ''माँ! हम कुछ दिन और गाँव में रुक सकते हैं क्या?''

- मथुरा (उ. प्र.)

रंगों से बचाव

चित्रकथा: देवांशु वत्स

गुरुदीन सिंह 'दीन'

– दिनेश प्रताप सिंह 'चित्रेश'

हमारी आँखें मंच पर टिकी थी। मंच पर दरी बिछी थी और उसके ऊपर मेज.... जिस पर रंगीन मेजपोश डाल दिया गया था। मेज के सामने सफेद लंबा कुर्त्ता और धोती के साथ भूरी सदरी पहने वह सज्जन खड़े थे। ऊँचा कद, मजबूत छरहरा शरीर, दबा हुआ गेंहुआ रंग और एक आँख हल्की–सी छोटी... यह थे–गुरुदीन सिंह 'दीन'।

मंच के सामने हम स्कूल बच्चे बैठे थे। हमारे दायें–बायें सात–आठ चारपायी और कुर्सियाँ पड़ी थीं। जिस पर हमारे मास्टर व गाँव के बड़े लोग विराजमान थे। इसके पीछे गाँव की जनता थी। जिससे स्कूल वाली बाग में मेला जैसा महौल बन गया था। यह सन् १९६२ की बात है और तारीख थी २५ अक्टूबर! हमारे गाँव में पहली बार कोई कवि आया था और मैं अपने सामने कवि को देख रहा था।

सबसे पहले दीनजी ने मंच के सामने उपस्थित सुनने वालों को प्रणाम किया। हम बच्चों को खूब पढ़–लिखकर साहब बन जाने का आशीष दिया। फिर उन्होंने अपनी सधी हुई बुलंद आवाज में कविता गाकर सुनाई–

'वतन के वास्ते नौजवां जो सर काटते हैं,
गगन के चाँद–तारे भी उन्हीं के गीत गाते हैं।
बचा ली देश की लाज जान दे करके,
उन्हीं की कब्र पर सब सिर झुकाते हैं।'

उनके विषय में दो रोज पहले राम अभिलाष शर्मा गुरुजी हमको बता चुके थे– ''पच्चीस अक्टूबर से दीवाली की छुट्टी होनी थी। मगर यह छुट्टी रद्द कर दी गई है। क्योंकि चेयरमैन पंडित देवकली दीन शर्मा जी के आदेश से इस दिन यहाँ दीन जी का प्रोग्राम लग गया है।'' ''यह कौन हैं?'' किसी ने पूछा था।

''कवि हैं, हिन्दी भाषा की किताब के कविता वाले पाठ में सोहनलाल द्विवेदी, द्वारिकाप्रसाद माहेश्वरी या अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' छपा होता है न! ठीक वैसे ही यह भी कवि हैं। यहाँ से बारह किलोमीटर दूर जयसिंहपुर थाना के पास एक गाँव सिकरा है, वहीं के हैं.....।''

शर्मा जी ने यह भी बताया था– ''अभी बीस अक्टूबर को चीन ने जो अचानक आक्रमण कर दिया है, उससे डर और हताशा फैली है। लोगों के बीच दहलाने वाली अफवाहें गूँज रही हैं– दीन जी इसकी सच्चाई भी बताएँगे।''

स्कूली दिनों में छुट्टी बड़ी चीज होती है, किन्तु कवि को देखने का उत्साह ऐसा जबरदस्त था कि छुट्टी जाने का गम तत्काल उड़न छू हो गया। कवि को

लेकर जो जिज्ञासा हुई थी। दो दिन उसमें डूबते-उतराते बीते थे। आज मैं रोज से कुछ जल्दी विद्यालय आ गया था। लेकिन कई सहपाठी पहले से ही साफ-सफाई में जुटे थे। राममनोरथ सिंह और शर्मा गुरुजी बेंत लहराते हुए बच्चों से काम करा रहे थे। मैंने भी तत्काल बस्ता रखकर झाड़ू उठा लिया। इसी बीच इकबाला हुसैन और लौटनराम गुरुजी भी आ गए। साढ़े नौ बजते-बजते गाँव से कुछ लोग तख्त पहुँचा गये। मंच सज गया। तब पढ़ाई शुरू हुई। करीब ग्यारह बजे से गाँव वाले आने लगे थे। तभी दीन जी भी साइकिल से आते दिख गए थे।

एक के बाद दीन जी ने कविता शुरू की-

'हम हैं वतन के दीवाने वतन के लिए,
जान की बाजी अपनी लगा देंगे हम।
गर जरूरत पड़ी तो खुद की कसम,
काटकर सर भी अपना चढ़ा देंगे हम।।'

उनकी आवाज दमदार थी और राग बड़ी सधी हुई। झूमते हुए कविता पाठ करते थे। दो-तीन पंक्ति पढ़ने के बाद देश-दुनिया से जोड़कर उसका अर्थ भी बताते थे। यह लाइनें कहने के बाद बताने लगे- ''आज सब जगह यह सनसनी फैली है कि हमारी सेना हारती जा रही है, बिलकुल गलत है। हमारा एक जवान शहीद होने से पहले पाँच-दस दुश्मनों को मौत की नींद सुलाता है। हमारे देश के चीन पर पड़े अहसान थे। सन १९५० में भारत पहला गैर समाजवादी देश था। जिसने चीन को मान्यता दिया। सन १९५४ में पंचशील समझौते पर भारत और चीन ने हस्ताक्षर किया था। उसमें साफ लिखा है कि हम एक-दूसरे पर आक्रमण नहीं करेंगे। किन्तु धोखेबाज ने अचानक सीमा पर गोलीबारी शुरू कर दिया। हमारे सैनिक तनिक लड़खड़ा गए थे। किन्तु अब हमारे जवान पत्थर की चट्टान बन गए हैं उनका तराना है-

हम भारत के वीर जवान,
बंदूक लेकर खड़े हैं।
हिम्मत है तो आगे बढ़,
हम जान लेने को अड़े हैं।।

उन्होंने अपने लम्बे हाथ सामने निकलते हुए, सिर आगे लाकर ललकार भरी आवाज में गाया और तालियों की गड़गड़ाहट से बाग का चप्पा-चप्पा गूँज उठा। एक मिनट तक वह हर तरफ देखते रहे और फिर जैसे ही तालियाँ रुकीं। बाग में उनका नया गीत लहरा उठा-

गांधी सावरकर का खिलता बगीचा है ये,
खून से शहीदों ने सींचा जिसे।
उसके काम आयें ये मेरी हड्डियाँ,
माँस खाएँ परिंदे मेरा यही कामना।।

सारे श्रोता उनको ध्यान से सुन रहे थे। वह फिर से चीन की कारस्तानी सुनाने लगे– ''सन १९५० में चीन ने तिब्बत की आजादी पर डाका डाला। हमारे प्रधानमंत्री ने विरोध किया। चीन ने भारत के निर्जन अक्साई चीन क्षेत्र में चोरी–चोरी एक सड़क बना ली। इसका भी भारत ने कड़ा ऐतराज जताया। यह मैं इसलिए बता रहा हूँ, कि भ्रम फैला है कि हमारे प्रधानमंत्री चीन से बेहद डरे हैं। जब वे देश के नाम संदेश दे रहे थे तो उनकी आवाज काँप रही थी।''

सब उनकी बातें गंभीरता से सुन रहे थे, हर तरफ निगाहें दौड़ाते हुए दीन जी ने तत्काल भाँप लिया। अब उन्होंने सख्त लहजे में कहना शुरू किया– ''यह सरासर बकवास है। ऐसा प्रसारण की तकनीकि कमी की वजह से हुआ था। सन् १९५९ में दलाईलामा चीन से निकलकर भारत आए थे। तब भारत ने उनको शरण दिया। चीन ने ऐतराज किया तो प्रधानमंत्री ने दो टूक उत्तर दिया कि शरणागत को सुरक्षा देना हमारी सदियों पुरानी परम्परा है, हम इसे नहीं छोड़ सकते।

दीन जी बड़ी सहजता से बता रहे थे– ''प्रधानमंत्री हमेशा यह कहते आए हैं। 'नेफा और अक्साईचिन हमारा है और हमारा रहेगा। कोई उधर गलत इरादे से आँख उठाकर भी देखे, तो हमें बर्दाश्त न होगा।' इतना अवश्य है, चीन युद्ध की तैयारी में जुटा था। जब तैयारी पूरी हो गई। उसने अचानक हमला बोल दिया। हमारे सैनिकों के साथ दिक्कतें हैं। उनके पास हाड़ गलाने वाली सर्दी लायक वर्दियाँ नहीं हैं। गोल–बारूद की भी कमी है। मगर जवानों ने इसका भी तोड़ निकाल लिया है। सर्दी से बचाव के लिए डबल वर्दी पहन लेते हैं और निशाने पर गोली दागते हैं। अनावश्यक नहीं।''

वह बड़े आराम से उन बातों को खारिज करते जा रहे थे। जो लोगों की चिंता और तनाव का कारण बनी हुई थीं। लोग ध्यान से सुन रहे। उनके बताने के ढंग से लग रहा था। भारत और चीन का पूरा का पूरा मामला उनके सामने से गुजर चुका हो। और तो और इस बीच वह युद्ध क्षेत्र का भी कई चक्कर लगा आए हैं। तभी इतनी सटीक जानकारी दे पा रहे हैं।

उस रोज लगभग तीन बजे तक दीन जी अपनी रचनाएँ सुनते रहे। बहुत मजा आया था। उन्होंने हम बच्चों को खुद कविताएँ बनाकर साप्ताहिक गोष्ठी में सुनने की बात कही थी। हमारे हेडमास्टर साहब ने भी इस सुझाव का स्वागत किया था। दीन जी के पास पुस्तकों का एक बंडल था। यह पतली–सी सोलह पृष्ठ की पुस्तक थी। इसका मूल्य पाँच पैसा था। कई लोगों ने यह पुस्तक खरीदी थी। कुछ बच्चों ने भी इसे लिया था।

बाद में दीन जी ने शर्मा गुरुजी को कुछ पुस्तकें दी थीं। यह उन बच्चों को देने के लिए थीं। जो दीपावली की छुट्टी के बाद पुस्तक के पैसे दे दें। इसमें से एक पुस्तक मैंने लिया था। मेरे छोटे भाई उमेश ने भी लिया था। उस दिन लगभग साढ़े चार बजे शाला बंद हुई थी। इस समय भी एक बार हमको आगाह किया गया था कि जैसी भी बन पड़े हमको कविता बनाकर लाना होगा।

हम बच्चे खुशी से उछलते हुए घर पहुँचे थे। उस शाम गाँव में भी रोज जैसी निराशा नहीं थी। दीपावली की चार दिन की छुट्टी में हम सबने कविता बनाने का खूब अभ्यास किया। मेरे परिवार से मैं और उमेश तथा बड़े पिता जी के दो नाती सुरेन्द्र व राकेश कुल चार लोग पढ़ते थे। द्वारिका भैया की सहायता से हमने चार कविताएँ बना ली थीं। हमारे गाँव के जय प्रकाश, श्रीराम, रविनारायण, जयगिरीन्द्र, श्रीनारायण वगैरह ने भी कविताएँ बनाई थीं और उत्साह के साथ घूम–घूमकर सबको सुनाया भी था।

आखिरी दिन मेरे साथ गड़बड़ हो गया। मेरे बड़े पिताजी ने मुझे पुस्तक के पैसे देने से मना कर दिया।

उनका कहना था। उमेश अच्छा गाते हैं। इसलिए उनके लिए यह पुस्तक ठीक है। फिर एक पुस्तक घर में आ चुकी है। उससे चारों लोग पढ़ सकते हो। शाला आने पर मैंने पुस्तक शर्मा गुरुजी को दे दिया था। यह भी एक संयोग था कि मेरे अलावा किसी ने पुस्तक नहीं लौटाई थी।

प्राइमरी पाठशाला बहादीपुर में अपना कार्यक्रम निपट के करीब साढ़े तीन बजे दीन जी मेरी शाला में आए। शर्मा गुरुजी ने उनको वसूली के पैसे दिए और मेरी लौटाई हुई पुस्तक। पुस्तक कुछ धुंधली हो चुकी थी। दीन जी उसे उलट-पलटकर देखने लगे तो शर्मा गुरुजी ने कहा- ''इस बच्चे के घरवालों ने पैसे नहीं दिये। इसलिए पुस्तक वापस हुई है।''

''कोई बात नहीं! उस बच्चे को बुलवाइए?'' दीन जी ने कहा।

शर्मा गुरुजी ने मुझे उनके सामने हाजिर किया। बड़े पिताजी ने जिस आधार पर पैसा देने से मना किया था। वह मैंने बता दिया। उन्होंने पूछा- ''उस दिन मैंने कविता बनाकर लाने को कहा था, लाए हो?''

''जी...!'' कहकर मैं झट कक्षा में जाकर अपनी कॉपी ले आया और अपनी कविता पढ़ दी-

मैं अशोक और समुद्रगुप्त की,
तलवार लेकर आया हूँ।
हजरत महल की लखनवी,
शमशीर लेकर आया हूँ।।
सम्हलो चीन मैं सबक देने का,
हौंसला लेकर आया हूँ।
तुम्हारी मक्कारी की सजा का,
फरमान लेकर आया हूँ।।

''वाह! बहुत अच्छे।'' दीन जी ने शाबाशी दी। फिर पूछा- ''बेटा! यह हजरत महल और शमशीर क्या है?''

हजरत महल लखनऊ के नवाब की रानी थीं और शमशीर भी तलवार होती है। मेरे बड़े भैया ने यह दोनों शब्द बताए हैं।'' मैंने बताया।

मेरी लौटाई हुई पुस्तक दीन जी ने मुझे पुरस्कार में दे दी। लोग बताते हैं, लड़ाई के उन दिनों दीन जी ने पूरे जिले में कविता के जरिए डर भगाकर वीरभाव का जागरण किया था। इससे जिला बोर्ड के चेयरमैन पंडित देवकली दीन शर्माजी बहुत खुश हुए थे। उन्होंने गुरुदीन सिंह 'दीन' से कहा था- ''कविराज! आप कक्षा आठ तक नहीं पढ़े हैं। इसलिए मजबूरी है, मैं आपको अध्यापक नहीं रख सकता। यदि आपको स्वीकार हो तो मैं आपको अपर प्राइमरी स्कूल जयसिंहपुर में चपरासी बना सकता हूँ। वहाँ एक-दो वर्ष में प्राइवेट परीक्षा देकर आठवीं की परीक्षा पास कर लीजिएगा। तब आपको अध्यापक बना दूँगा।''

दीन जी ने हाथ जोड़ते हुए विनम्र भाव से कहा था- ''पण्डितजी! बंधन मुझे अच्छा नहीं लगता। इसीलिए मैंने परिवार भी नहीं बसाया। आप आशीर्वाद दें। ऐसे ही बच्चों के बीच कविता सुनाते पुस्तक बेचते जीवन बीत जाए।''

जीवन भर उन्होंने यही किया। कवि सम्मेलनों में भी उनकी कदर थी। रेडियो स्टेशन लखनऊ से उनकी कविताओं का प्रसारण भी हुआ करता था। एक बार उन्होंने कविता में गणित और विज्ञान के सूत्रों व परिभाषाओं की पुस्तक भी छपवाई थी। उनकी तैयार कराई गई सामान्य ज्ञान की पुस्तक वर्ष १९७०-७२ के बीच बहुत पसंद की गई थी। वह मस्त तबीयत के आदमी थे। पूरा जीवन मस्ती में जिये। जीवन में वह इतना तो कमाए ही थे कि अस्सी वर्ष की आयु में जब उनका देहावसान हुआ तो आसपास के स्कूलों और क्षेत्र में दु:खभरा सन्नाटा छा गया था।

- जासापारा
(उ. प्र.)

कवि बौडम हास्य सम्मेलन में

– अरविन्द कुमार साहू

दुबला–पतला सींकिया पहलवान टाइप का वह व्यक्ति बड़े ध्यान से अपने मुहल्ले में लगे उस पोस्टर को देख रहा था। जिसमें बड़े भौकाल के साथ कुछ अजीबो गरीब नाम चस्पा किए गए थे। आपके शहर में होली पर धमाल मचाने आ रहे हैं महान खूंटा उखाड़ कवि सांड उत्पाती। चिंघाड़ हाहाकारी, दहाड़ प्रलयंकारी, खूसट बनारसी, बैल बिना–रस्सी, बेशर्म खुराफाती, कुल्हड़ मुस्तफावादी बकवास पागलखानवी, मुर्दा शमशानवी और चमचा जुगाड़ी आदि आदि। ये आप सबको हँसा–हँसाकर बदहाल कर देंगे। इस होली में बुरा हाल कर देंगे। आप सभी इस धुआँधार कवि सम्मेलन में सादर आमंत्रित हैं।

पोस्टर पढ़ते ही उसका पारा हाई हो गया। ब्लड प्रेशर बढ़ने लगा। वह चिहुँक कर बोला हेय ? मेरे क्षेत्र में कवि सम्मेलन और मुझे ही नहीं बुलाया। बहुत नाइंसाफी है। ये कैसे–कैसे बिना रस्सी के बैल, खूँटे तुड़ा–तुड़ाकर यहाँ आएँगे। सम्मेलन की फसल चरेंगे और मैं अपना खेत ताकता रह जाऊँगा। न... न... न... मैं ऐसा नहीं होने दूँगा। इस शहर के श्रोता केवल मेरी कविता सुनकर भागेंगे या फिर ये कविगण भाग जाएँगे। मैं श्रोताओं के खूँटा तुड़ाकर भागने का अपना रिकार्ड किसी और को खराब नहीं करने दूँगा। आ रहा हूँ मैं। एक–एक को देख लूँगा। आयोजक की ईंट से ईंट बजा दूँगा। सबसे निपट लूँगा। मेरा भी नाम कवि बौडम ऐसे ही नहीं है। हुम्म....।''

.....और वह तेजी से बड़बड़ाते हुए किसी घोड़े की तरह मुँह उठाए जिधर से रास्ता सूझा आयोजन स्थल की ओर चौकड़ी भरता हुआ निकल गया।

इधर कवि सम्मेलन में कविगण कविता पढ़ने को तैयार थे। सामने बड़ा–सा मंच लगा था। जिस पर कुख्यात कविगण विभिन्न आरामदायक मुद्राओं में आसन लगाए कविता पाठ के लिए बैठे थे। कुछ मुँह में तंबाकू सुपाड़ी भरे बैलों की तरह जुगाली कर रहे थे। कुछ जमकर खाने ढहाने के बाद फूल कर कुप्पा हुई तोंदें सहला रहे थे। कुछ खूब छान घोटकर आए थे और नशीली आँखों से झूम रहे थे। कुछ नाक में नसवार या सूँघनी लगाए बार–बार छींक रहे थे। कुछ नए कवि लिखी हुई पर्चियों से रट्टा मारकर बेसुरे गले से कविता पाठ के पूर्वाभ्यास में लगे थे। और कुछ वहीं पर किसी गैर साहित्य प्रतिक्रिया को लेकर आपस में कौं–कौं, भौं–भौं में जुटे थे। लग रहा था कि कोई अखाड़ा है और किसी भी समय जूतम पैजार शुरू हो सकती है।

कुल मिलाकर बड़ा मजेदार नजारा था। समझ में नहीं आ रहा था कि ये सचमुच हास्य कवि ही हैं या किसी नौटंकी कंपनी के जोकर पकड़ लाये गए हैं। इन्हें देखकर कवि बौडम का पारा आसमान पर चढ़

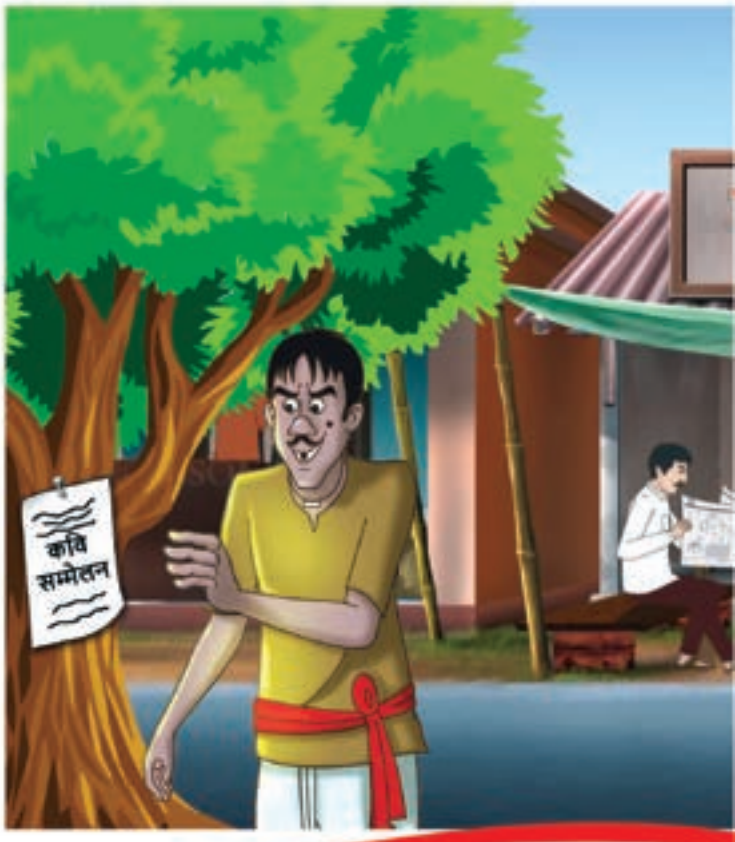

गया। सबके सब उसकी बराबरी वाले टक्कर के जो लग रहे थे। वह फटे बांस जैसी आवाज में चीखकर बोला– ''कौन है यहाँ का आयोजक? कोई सामने आयेगा या मैं करूँ कवि सम्मेलन का शुभारंभ?''

एक दुबला–पतला मरगिल्ला–सा आदमी कवियों के मंच के पीछे से उचकता हुआ आया। गला खंखार कर लड़कियों जैसी पतली आवाज में बोला– ''क.... क.... कौन है? क्यों कौवे जैसा चीख–चीख कर गला फाड़ रहा है?''

बौड़म की त्यौरी चढ़ गई– ''अच्छा! मुझे पूछता है कि मैं कौन हूँ? पहले तू बोल कनकव्वे! क्या तू ही आयोजक है?''

''हाँ मूँगफली के छिलके! मैं ही आयोजक हूँ। बोल क्या कर लेगा?''

''मैं.... मैं.... क्या कर लूँगा? मुझसे पूछता है मैं क्या कर लूँगा? अरे! कवि बौडम से पूछता है कि क्या कर लेगा? अभी बताता हूँ।''

कवि बौडम का नाम सुनते ही आयोजक के कान खड़े हो गए। बार–बार सुना हुआ बड़ा जाना पहचाना नाम था। वह कवि सम्मेलनों की शान बढ़ाने वाला नहीं बल्कि जान निकालने वाला बंदा था। वह अपनी ऊटपटांग कविताओं से रंग में भंग डाल देता था। श्रोताओं को बांध कर रखो तो भी वे खूँटा तुड़ा कर भाग जाते थे। उसकी अजीबो–गरीब कविताओं से दूसरे कवि पागल हो जाते थे। सिरदर्द की गोलियाँ बेचने वाले सिर पर झाबा रखे फेरी लगाना शुरू कर देते थे। मंच पर फेंके गए सड़े हुए अंडे, टमाटर बटोरने के लिए आमलेट के खोमचे और सब्जी की रेहड़ी लगाने वाले टूट पड़ते थे। पुराने जूते चप्पलों को बटोरने के लिए नगर के मोचियों में जंग छिड़ जाती थी। और यह सब देखकर बेचारे आयोजक तो पूरी तरह बेहोश ही हो जाते थे।

यह आयोजक भी यह सब सुन चुका था। वह कवि बौड़म से पंगा लेकर अपना धंधा खराब नहीं करना चाहता था। लेकिन कवि बौड़म को उसी के नगर में न बुलाकर जाने–अनजाने वह पंगा तो ले ही चुका था। पर समझदारी दिखाते हुए बोला– हें हें हें, आप हैं कवि बौडम जी। क्षमा करें अजी आपका बहुत नाम सुना था। आज दर्शन भी कर लिए। नमस्कार, नमस्कार, आइये जी, आपका स्वागत है।'' आयोजक ने खीसें निपोरते हुए तुरंत अपने सुर बदल लिए।

सुन आयोजक! ये लल्लो–चप्पो और मक्खन बाजी बंद कर। मुझे तो केवल इतना बता कि मैं अपनी कविताएँ मंच पर जाकर पढ़ूँ या यहीं से खड़े–खड़े शुभारम्भ करूँ?''

आयोजक को सर्दी में भी पसीने छूट गए। उसने जिस डर से बौडम को यहाँ नहीं आमंत्रित किया था। वही मुसीबत गले पड़ गई। बचने का कोई रास्ता नहीं था। किन्तु वह भी धंधेवाला बंदा था। उसे पता था कि आयोजन नहीं हुआ तो वसूला गया चंदा डकारना कठिन हो जाएगा। तेजी से अकल के घोड़े दौड़ाए तो एक रास्ता सूझ गया। बोला– ''अरे नहीं

बौडम जी! भला आप जैसा वरिष्ठ कवि पहले कैसे सुना सकता है? अरे आपकी वरिष्ठता को देखते हुए हम आपको इस कवि सम्मेलन का अध्यक्ष बनाएँगे और आप तो जानते ही हैं कि अध्यक्ष महोदय सबसे बाद में कविता पाठ करते हैं। शुरुआत तो नौसिखियों से होती है।''

बौडम गदगद हो गया। इससे पहले वह किसी कवि सम्मेलन का अध्यक्ष नहीं बनाया गया था। क्योंकि उसके होते हुए इसकी नौबत ही नहीं आती थी। उसके कविता पाठ के कारण कवि सम्मेलन शुरू होने से पहले ही समाप्त हो जाते थे। उसे पारिश्रमिक का लिफाफा कभी नहीं मिल पाया था। बस अंडे, टमाटर और जूता, चप्पल बटोरने वालों से मिलने वाले कमीशन पर ही उसकी गाड़ी खिसक रही थी। जी हाँ, ये सब उसके ही बंधे हुए व्यापारी बंदे थे। जो हमेशा बौडम के कवि सम्मेलन में पहुँचने से पहले ही उपस्थित हो जाया करते थे।

बहरहाल, बौडम भी कम चालाक नहीं था। उसने भी आयोजक की मंशा भाँप ली थी कि उसको चुप रखने का लाजवाब तरीका अपनाया जा रहा है। धीरे से बोला– ''तो महोदय! आप यह भी जानते होंगे कि कवि बौडम कविता पाठ निशुल्क करता है और चुप रहने का ही लिफाफा वसूलता है।''

''हैंऽऽऽऽऽऽ ऐसा होता है क्या?'' आयोजक की छोटी–छोटी बटन जैसी आँखें आश्चर्य से मानो बाहर निकल आई।

''हाँ जी! मेरे साथ ऐसा ही होता है। चलिये लिफाफा निकालिए। बौडम के साथ बहुत चतुर खिलाड़ी न बनिए। इतने घाघ कवियों को सुनने के बाद मुझे सुनने के लिए यहाँ उल्लू भी बैठा नहीं मिलेगा।''

लेकिन लिफाफा तो समापन के बाद ही देने की परंपरा है। आयोजक गिड़गिड़ा कर बोला– ''अरे! परंपरा की ऐसी की तैसी। बौडम जहाँ खड़ा होता है न परंपरा वहीं से शुरू होती है। चल जल्दी माल का लिफाफा निकाल वरना मैं अपना कविता पाठ शुरू करता हूँ, समझा क्या?'' बौडम की घुड़की से आयोजक का सिर चकरा गया। उसे रात में भी सूरज नजर आने लगा। बेचारा, मरता क्या न करता। बौड़म को लिफाफा देना ही पड़ा।

बौडम ने पूरे पाँच हजार रुपए के अलावा आने जाने के एवज में अपनी घिसी हुई चप्पल का किराया एक सौ एक रुपए अलग से वसूला। तब जाकर शांति पूर्वक लेकिन शान से अकड़ते–बकड़ते दोनों हाथ ऊपर उठाकर हिलाते हुए भौकाल के साथ मंच पर पहुँचा। आयोजक ने बौड़म की शान में झूठी तारीफें करते हुए उसे माला पहनाई और अध्यक्ष बनाकर बैठा दिया। बौडम को देखते ही श्रोताओं और कवियों में

अजीब–सी बेचैनी भर गई। खुसर–फुसर शुरु हो गयी। बढ़ते शोर से माहौल कुछ बदले, उसके पहले ही सतर्क संयोजक ने माइक संभाल लिया– कविता के दीवानो! आ गए हैं हँसी के परवाने आपको कविता सुनाने, कविता की करारी आँच में आपको झुलसाने। सचमुच, मंच पर बैठे कवियों में बड़ी आग है। इतनी आग है कि इससे आप अपनी भड़ास का हुक्का भी सुलगा सकते हैं।''

एक श्रोता झल्ला कर बोला– ''इतने क्या कम थे जो एक और नमूने को उठा लाये। हमारे जिगर में आग भड़काने के लिए?''

संयोजक चालू रहा– शांत रहिए, अब कवि सम्मेलन शुरू होगा। लेकिन अफसोस, दुखद, दर्दनाक। इससे पहले हम एक छोटा सा ब्रेक लेंगे।

रुकेंगे.... शोक मनाने के लिए। दरअसल पिछले वर्ष हमारे आयोजक महोदय की नानी मर गई थी। वे कितनी कविता प्रेमी थी यह तो हमें नहीं पता, पर इतना अवश्य है कि तब के महा बेरोजगार हमारे आयोजक महोदय को कवि सम्मेलनों का आयोजन कराकर कोई ढंग का ढर्रा पकड़ाने का लाजवाब आइडिया उन्हीं का था। आज उन्हें कवि सम्मेलनों के भारी भरकम चंदे ढंग से 'हैंडल' (अर्थात् हजम) करते देख कर चाँद पर बैठी हुई उनकी आत्मा निश्चित ही कई गुना तेजी से चरखा कातने लगी होगी। अभी भले ही उन्हें बार–बार चरखे की तकली चुभ रही होगी किन्तु आयोजक महोदय की प्रगति देखते हुए हमें ऐसा विश्वास है कि वे जल्द ही चाँद पर हवा और पानी की फैक्ट्री अवश्य लगा लेंगे। ताकि नानी की आत्मा को चरखे कातने के शारीरिक मेहनत वाले से कार्य से पूरी तरह मुक्ति मिल जाए।''

''वाह– वाह, वाह–वाह!'' लोगों ने शोक प्रस्ताव के समर्थन में भी जमकर वाह–वाह कर दी।

''ईश्वर नानी जी की तरह आप सभी की आत्मा को संतोष प्रदान करें।'' संयोजक महोदय ने भाव–विभोर होकर कार्यक्रम आगे बढ़ाया– तो आइए, इस कवि सम्मेलन की शुरुआत हम आयोजक महोदय को धन्यवाद और श्रद्धांजलि के सन शब्दों से करते है– काश! तुम्हारे जैसी मरती सबकी नानी। हम सभी पहुँचते चाँद, बेचते हवा और पानी।''

''वाह वाह क्या बात है।'' श्रोताओं से पहले कवियों ने ही तारीफ झोक दी। शुभारंभ हो चुका था तो लीजिये, अब कवि के रूप में मंच पर अवतरित हो रहे हैं– महाकवि सूंड उत्पाती। भारी भरकम मोटे और थुल–थुल शरीर के सूंड जी देखने से ही महाकवि प्रतीत होते थे। उठने की कोशिश करते ही भरभरा कर फिर गिर गए। पूरा मंच चरमरा गया।

लोगों ने कहा– ''लगता है बिना कविता पढ़े ही

उत्पात मचा देंगे।'' कई लोगों ने उन्हें सहारा देकर उठाना चाहा पर वे संभल ही नहीं पा रहे थे। शायद बहुत अधिक भोजन कर लिया था। उन्हें आराम की बहुत आवश्यकता थी। सो संयोजक को कहना पड़ा– ''भाई! इन्हें अभी रहने दीजिए वरना इनको उठाने के चक्कर में कोई और उठ जाएगा। लीजिये दूसरे कवि हाजिर होते हैं श्री गर्दभ रागिया जी।''

रागिया जी अपने स्थान पर खड़े हुए, फिर गधे की तरह रेंकते हुए कविता पढ़ने लगे– ''आदमी और गधे में एक नया मामला है सधा। पहले आदमी ही आदमी को गाली देता था 'तू गधा–तू गधा।' अब गधों ने इस बात पर भर ली है हामी। वे एक दूसरे को गरियाएँगे, कहकर आदमी–आदमी।''

''वाह वाह, वाह वाह!'' श्रोताओं के साथ ही पास में रहने वाले धोबी भाई के कई गधे भी रेंकने लगे।

संयोजक प्रसन्न होकर बोला– ''कवि सम्मेलन ऊँचाई पर जा रहा है और वहाँ से अगला कवि दहाड़ प्रलयंकारी आ रहा है।'' कवि दहाड़ प्रलयंकारी आए और वीर रस में ओत–प्रोत एक कविता गला फाड़–फाड़कर पढ़ने लगे। जो दुश्मन आँख दिखाएगा, उसको औकात बता दूँगा। ये आसमान मैं फाड़ूँगा। ये धरती तोड़ हिला दूँगा। इसी के साथ उन्होंने पूरे जोश में दहाड़ते हुए अपना पैर जोर से पटका। पता नहीं उनका भाग्य खराब था या फिर यह मंच ही उनका दुश्मन था। उसका एक टूटा हुआ पटरा उनके पैर का आघात सहन नहीं कर सका और वहीं धँसकर शहीद हो गया। लेकिन दुश्मन हो तो उस टूटे पटरे जैसा। जो उसी धँसी हुई जगह में कवि दहाड़ का पैर भी खींच ले गया। वे जोर से चीखे– ''हाय मर गया।'' लोग देखने दौड़े– एक टाँग अंदर, वीर रस का कवि बाहर। लोग ठहाका लगाकर हँस पड़े। कवि की दहाड़ म्याऊँ में बदल गई थी।

''..... और अब आ रहे हैं अगले कवि मुर्दा शमशानवी।'' किसी जिन्दा भूत की तरह झूमते हुए उन्होंने कविता पाठ शुरु किया– मैंने यमराज का आदेश नहीं माना, नर्क में भी बंद नहीं किया कविता सुनाना। सारे मरे हुए लोग नरक से भागने लगे। मेरे भाग जागने लगे। यमराज दूतों से बोले– ''जहाँ से लाये हो इसे वापस छोड़कर आओ।'' मुझे डाँटा– ''अब जाकर शमशान में मुर्दों को ही कविता सुनाओ।''

''..... और आप यहाँ आ गए। हमारी जान खाने।'' श्रोता हूटिंग करने लगे तो वे बैठ गए।

अब अगले कवि खूसट पागलखानवी खड़े हो गए। सुनाने लगे– ''हमारी शक्ल–सूरतों पर न जाता। पागल है यारों ये सारा जमाना। अगर आए हो मेरी कविताएँ सुनने, तो वापस तुम्हें भी मेरे घर है जाना।'' इस कविता से लोग उकता कर अंडे–टमाटर फेंकने लगे। तब तक अगले कवि अक्खड़ बरबादी जी बिना बुलाये ही खड़े हो गए– मैं अभी बिन बुलाया मेहमान हूँ। आपकी बोरियत का ही सामान हूँ। आप कह दो अभी बैठ जाऊँगा मैं, ऐसे माहौल से स्वयं परेशान हूँ।'' लोगों ने जूते चप्पले फेंक कर मारी– तू तो भाग ही ले यहाँ से, वरना हम सब तुझे अस्पताल पहुँचा देंगे।

इसी तरह कविगण आते गए। कवि सम्मेलन ऊँचाइयों पर पहुँचकर बार–बार लुढ़कता रहा। कुछ कवि श्रोताओं को हँसा कर गए तो कुछ अपनी छीछालेदर करवा कर गए। लोगों की हूटिंग–शूटिंग चलती रही। अंडे टमाटर और जूते चप्पल वाले भी बीच–बीच में अपना काम निपटाते रहे। लेकिन फाइनल धमाका तो अभी बाकी था। कवि बौडम जैसा पटाखा तो अभी बाकी था। सो, प्रतीक्षा की घड़ियाँ समाप्त हुई। संयोजक का थका हारा और रुआँसा लग रहा अंतिम स्वर गूँजा और अब आखिरी कवि के रूप में आज के सम्मेलन के अध्यक्ष श्री बौडम जी पधार रहे हैं।''

बौडम तो ठहरा बौडम, बस आते ही चालू हो

गया– ''बना रहे धोबी यहाँ गदहों की सरकार। ढेंचू–ढेंचू कर रहे सभी दुलत्ती मार।''

''वाह–वाह!'' लोग खुशी से नाच उठे। ''और सुनाइये....।''

आमलेट अंडे सभी मिले यहाँ पर मुफ्त।
खाकर कविगण हो रहे बिल से टेंशन मुक्त।।

''वाह वाह और सुनाइए.....।'' फिर क्या था। कवि बौडम स्पीड पकड़ने लगा। उसकी कविता के सोये हुए कीटाणुओं की नींद खुल चुकी थी। वे एक–एक करके बाहर आने लगे। फिर महामारी की तरह फैलने लगे। शुरु में लोग हँस रहे थे। फिर ऊबने लगे। जल्दी ही उन्हें झुंझलाहट होने लगी। बौडम की कविताएँ पढ़ने की स्पीड बढ़ती ही जा रही थी। अब वो हाथ नचा–नचाकर मटकने भी लगा था। पागलों की तरह कविता की राह से भटकने भी लगा था। लोगों का सिर दर्द करने लगा। दवाइयाँ बेचने वालों धंधा शुरू हो गया।

और सुनाइये, और सुनाइये.... कहने वाले लोगों ने हूटिंग शुरु कर दी– बैठ जाइए– बैठ जाइए के स्वर गूँजने लगे। पर बौडम को जो न सुने, उनकी बौडम ही कब सुनता था। वह और तेजी से चालू हो गया। लोग अंडे, टमाटर फेंकने लगे। बौडम फिर भी न रुका। अब लोग पागलपन का शिकार होने लगे। जूते, चप्पलों की मार शुरू हो गई। लोग अपने बाल नोचने लगे पर कवि बौडम का कविता पाठ नहीं रुका। बवाल की नौबत आ गयी। लोग लड़ने–झगड़ने लगे मार काट पर आमादा हो गए।

आयोजक ने यह हाल देखा तो भाग खड़ा हुआ। पीछे से संयोजक भी लपका– ''अरे मेरा लिफाफा तो देते जाओ।'' उसे देख बाकी कवि भी अपना–अपना लिफाफा माँगते हुए उसके पीछे दौड़े। कवियों को भागता देख बौराये हुए लोग भी उनके पीछे दौड़ने लगे। सचमुच, जबर्दस्त भगदड़ मच गई थी।

लेकिन कवि बौडम धुन के पक्के थे। लगे रहे, जमे रहे। हाथ नचा–नचा कर उछल कूद कर सुनाते गए। कोई सुन रहा है या नहीं इसकी परवाह किए बिना मंच पर डटे रहे। एक छत्र राज्य हो गया था। सारा स्टॉक खत्म किए बिना न माने। आखिर बड़े दिनों बाद ऐसा बढ़िया अवसर आया था। आखिरकार वो भी थक गए। पक गए, फिर बेहोश होकर मंच पर ही लुढ़क गए।

अब तक सुबह हो गई थी। टूटा मंच, उजड़ा पंडाल, टूटी कुरसियाँ चीख–चीख कर रात की कहानी बयान कर रही थी।

जब कवि बौडम की नींद खुली, देखा एक व्यक्ति उनके चेहरे पर पानी के छींटे मार रहा था। उन्हें बेहोशी से उबार रहा था। आँख खुलते ही बौडम उससे लिपट गए। फेविकोल की तरह चिपट गए। बोले– ''तू सच्चा श्रोता है। कविता प्रेमी ऐसा ही होता है। तूने सारी रात और सुबह तक मुझे सुना। मेरी कविताओं को गुना। अब मुझे जगा रहा है। कुछ और सुनने की आस लगा रहा है।''

सामने वाले का चेहरा भय से पीला पड़ गया। कवि बौडम के पैरों में गिर गया। बोला– ''कविवर! मुझे माफ करो। मेरे धंधे से इंसाफ करो। मैं कविता प्रेमी नहीं टेंट वाला हूँ। अपना बचा हुआ समान ले जाने वाला हूँ। ये आखिरी दरी भी मुझे समेट लेने दीजिये। इसी पर आप लेटे हैं इसे अब तो छोड़ दीजिये।''

कवि बौडम को होश आया। उसने फटाफट अपना झोला उठाया। उसमें सिर घुसाकर देखा– ''लिफाफा सही सलामत था।'' तत्काल वहाँ से भाग निकला। सीधे घर पहुँचा। अंडे, टमाटर और जूते, चप्पल वाले अपना काम कर चुके थे। कमीशन का नया लिफाफा लिए उसके दरवाजे पर खड़े थे। कवि बौडम धन्य हुआ, खूब प्रसन्न हुआ। चलो, इस बार का कवि सम्मेलन भी सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

– रायबरेली (उ. प्र.)

तारीफ

चित्रकथा-

अरे राधे तुम.. जिन्दा हो?
क्या मतलब?
ओह.. मुझे लगा तुम गुजर गए..
क्या बके जा रहे हो मोहन?
माफ करना यार..
..असल में कल मुहल्ले में कुछ लोग एक साथ खड़े तुम्हारी तारीफ कर रहे थे..
अब तुम्हीं बताओ आजकल लोग भला जीते जी भी किसी की तारीफ करते हैं..?

होली के रंग

– सुधा दुबे

हुर्रे–हुर्रे का मच गया शोर।
होली रंग का सब पर जोर।
लाएँ कहाँ से रंग व गुलाल।
रंगों से होती बीमारी हजार।
दादाजी ने सबको समझाया।
प्राकृतिक रंगों का जादू बताया।
त्वचा आँखें नहीं होंगे खराब।
सोनू गोलू को उपाय मन भाया।
गो काष्ठ की होली जलाई।
टेसू चंदन हल्दी की घिसाई।
गेंदा चुकंदर की खूब घुलाई।
रोली तिलक लगाकर दी बधाई।
मित्रों से गले मिले बैर भुलाई।
बड़ों की झुककर पैर छुवाई।
खुश रहो और खूब करो पढ़ाई।
अम्मा बाबूजी ने मिठाई खिलाई।

– भोपाल (म. प्र.)

माई–बाप!

– तपेश भौमिक

महाराज कृष्णचंद्र गोपाल से प्रगाढ़ स्नेह संबंध रखते थे। यहाँ तक कि यदि कोई उसके बारे में कोई भी शिकायत करता तो उसकी अच्छी खबर लेते थे। लेकिन कहते हैं न कि ''जो जिससे जितना अधिक प्यार करता है उसका उससे उतना अधिक झगड़ा भी होता रहता हैं।'' यही बात महाराज कृष्णचंद्र और गोपाल के बीच भी थी।

एक दिन ऐसा हुआ कि किसी बात पर महाराज गोपाल से काफी नाराज हो गए थे। उन्होंने क्रोध में आकर गोपाल को कह दिया– ''सूअर के बच्चे! तू अपने आपको क्या समझता है?''

इस पर गोपाल के चेहरे पर जरा–सी शिकन भी नहीं आई। उल्टे वह हँसने लगा। उसे हँसता देख महाराज को और अधिक क्रोध आ गया। वे क्रोधवश

पैर पटकने लगे। गोपाल ने महाराज को कहा– ''हजूर आप ही मेरे माई–बाप हैं, आपको अपनी संतान को गाली देने की पूरी छूट है।''

– कूचबिहार (पश्चिम बंगाल)

कुएँ की चीखें

– रजनीकांत शुक्ल

''चलो कुएँ पर नहाने नहीं चलेगी?'' गेंदीबाई ने अपनी सहेली गुड्डीबाई के घर में घुसते ही आवाज लगाई।

''हाँ हाँ, चलेंगे चलेंगे। तो अभी सुबह से ही चल पड़ें क्या?'' गुड्डी ने हँसते हुए जबाब दिया।

''तो बताओ, फिर कितनी देर में चलना है?'' गेंदीबाई ने लगभग आते हुए पूछा।

''आओ, कुछ देर बैठो। तब तक मैं कुछ घर के काम निपटा लूँ। फिर चलते हैं।'' गुड्डी ने गेंदीबाई से कहा।

गाँव में उन दोनों के घर भी पास-पास थे और उनके मन भी बहुत ही निकट थे। वैसे तो गुड्डीबाई की आयु पंद्रह वर्ष और गेंदीबाई की अट्ठारह वर्ष थी किन्तु वे दोनों आपस में पक्की सहेलियाँ थीं।

यह मध्यप्रदेश राज्य के राजगढ़ जिले की ब्यावरा तहसील का लोदीपुरा गाँव था। जिसमें बैठी हुई ये दो सहेलियाँ आपस में यह चर्चा कर रही थीं। वर्ष था १९९९ का और उस दिन सितम्बर महीने की तीस तारीख थी।

हँसते-हँसते आपस में बातें करते हुए गुड्डीबाई ने अपना घरेलू काम को जल्दी-जल्दी निबटाया और फिर आवश्यक कपड़े उठाकर गेंदीबाई के साथ गाँव के कुएँ की ओर नहाने के लिए चल दी। रास्ते में भी वे आपस में बातें करती जा रही थीं। कुआँ उनके घर से दूरी पर था। उनकी बातें तो समाप्त होने का नाम नहीं ले रही थीं। दुनिया जहान की बातें करती-करती वे नहाते के लिए उस गाँव के कुएँ पर जा पहुँचीं। वह कुआँ गाँव में एक ऐसे किनारे की ओर था जिधर उस समय अधिक लोग नहीं थे जो थे भी वे उस समय तक जा चुके थे जब तक ये दोनों नहाने के लिए वहाँ पहुँचीं। अब केवल वे दोनों ही कुएँ पर उपस्थित थीं।

उन दोनों में सबसे पहले गुड्डीबाई ही नहाने के लिए आगे बढ़ी उसके पीछे-पीछे गेंदीबाई भी अपने कपड़ों को व्यवस्थित करती हुई नहाने के लिए जाने की तैयारी में लगी हुई थी।

यकायक पता नहीं कैसे लापरवाही या अनजाने में गुड्डीबाई का पैर फिसल गया और जब तक वह सँभलती सँभलती वह उस कुएँ के अन्दर जा गिरी। जोर का छपाक् की आवाज आई तो गेंदी ने भी दृष्टि उठाकर देखा। ''अरे! क्या हुआ?'' कहती हुई गेंदी आगे बढ़ी। उधर गुड्डीबाई खुद को बचाने के लिए पानी में हाथ पाँव मारने लगी लेकिन उसे तैरना नहीं आता था इसलिए वह सहायता के लिए गेंदीबाई को आवाज देने लगी।

संकट में फँसी हुई अपनी प्यारी सहेली की आवाज सुनकर गेंदीबाई स्वयं को रोक न सकी और तेजी से बढ़ती हुई गुड्डी को बचाने के लिए कुएँ के पानी में उतर गई। बिना यह सोचे कि उसे भी गुड्डी की तरह से तैरना नहीं आता है। परिणाम वही हुआ जो होना था बचाने गई गेंदीबाई भी गुड्डीबाई की तरह ही उस कुएँ के पानी में डूबने लगी।

अब कुएँ के अन्दर से बचाव के लिए दोनों की चीखें आनी शुरु हो गईं। उस समय उस कुएँ के आसपास गाँव का कोई भी नहीं था सिवाय एक विकलांग बच्चे के जो वहाँ पास में ही सूखी लकड़ी काट रहा था। उसका नाम सत्यनारायण बैरागी था। साढ़े पन्द्रह वर्ष के सत्यनारायण ने जब अपने निकट कुएँ के अन्दर से आती हुई उन चीखों को सुना तो उसका ध्यान उस ओर गया।

उसने तुरन्त लकड़ी काटना छोड़ दिया और तेजी से दौड़ता हुआ कुएँ के निकट तक जा पहुँचा। उसने कुएँ में झाँककर देखा तो उन दिनों सहेलियों को कुएँ के पानी में डुबकी लगाते पाया। उसने एक बार

इधर-उधर देखा किन्तु उसे कोई भी ऐसा नहीं दिखाई दिया जो उनकी उस समय सहायता करता। अब सत्यनारायण अपनी विकलांगता की परवाह न करते हुए स्वयं सावधानीपूर्वक कुएँ में एक-एक कदम जमाता हुआ नीचे उतरा।

अगर वह लापरवाही करता तो बचाने के बजाय स्वयं भी डूब सकता था क्योंकि डूबने वाला तो अपने बचाव की हरचन्द प्रयत्न करता है। इसीलिए यह कहावत भी कही जाती है कि- ''हम तो डूबेंगे सनम तुमको भी ले डूबेंगे।''

वह तो अच्छा हुआ कि उसे कुएँ तक आने में थोड़ी देर हो गई इस बीच गुड्डी और गेंदीबाई को पानी में दो तीन डुबकियाँ लग चुकी थी। इसलिए वे पस्त हो चुकी थीं सो सत्यनारायण को उन्हें कुएँ से बाहर निकालने में उस तरह की परेशानी नहीं आई कि वे स्वयं बचने के लिए सत्यनारायण को भी पानी में ही खींच लेतीं।

किन्तु फिर भी उस कुएँ से अपने से बराबर और बड़ी दो-दो लड़कियों को बाहर निकालकर लाना इतना आसान काम भी नहीं था। सत्यनारायण ने एक-एक कर दोनों को खींचकर उठाकर कुएँ से बाहर किया। उनके पेट में मुँह के माध्यम से पानी जा चुका था और वे अर्ध बेहोशी की स्थिति में थीं। सत्यनारायण के आवाज देने से कुछ लोगों का ध्यान उस ओर गया और वे लोग दौड़कर आए।

उनके सहयोग से दोनों के पेट में भर गया पानी निकाला गया। दी गई प्राथमिक सहायता से कुछ देर में उन दोनों को चेतना आई। तब उन्होंने सारी बात गाँव वालों को विस्तार से बताई। सारी बात जानकर लोगों ने सत्यनारायण की बहुत सराहना की।

ग्रामपंचायत की ओर से सत्यनारायण बैरागी का अभिनंदन किया गया। सत्यनारायण का नाम उचित माध्यम से भेजा गया तो वह राष्ट्रीय बाल वीरता पुरस्कार २००० के लिए चुन लिया गया।

गणतंत्र दिवस २००१ के अवसर पर सत्यनारायण बैरागी को भी देश के अन्य भागों से चुने गए बहादुर बच्चों के साथ देश की राजधानी दिल्ली में आमंत्रित किया गया। जहाँ उसे देश के प्रधानमंत्री जी के हाथ से राष्ट्रीय बाल वीरता पुरस्कार और गणतंत्र दिवस पर राजपथ की ऐतिहासिक परेड में भी शामिल होने का अवसर मिला।

नन्हे मित्रों,

अगर सोच लो सच्चे मन से सब कुछ कर सकते हो।
आँखों में गम नहीं खुशी के आँसू भर सकते हो।
हटे कदम पीछे तो परछाई से डर सकते हो।
हिम्मत है तो अमर रहे जो ऐसे मर सकते हो।

- नई दिल्ली

पानी की आत्मकथा

– रामगोपाल राही

बरसात के दिन थे– वर्षा हो चुकी थी। धरती पर चहुँ ओर हरियाली हो गई थी। एक दिन अतुल साथियों के साथ वन में भ्रमण के लिए गया। हरी–भरी प्रकृति का दृश्य देख सभी साथी बहुत प्रसन्न थे। झरनों से पानी बह रहा था ऊपर से झरना गिर रहा था। रास्ते में नदी देखी वह भी उमड़ रही थी। बाढ़ आ रही थी हरियाली से जंगल हरा–भरा था। पहाड़ भी हरे–भरे नजर आते थे। बरसात का नजारा आकाश में झुके–झुके बादल इधर–उधर दौड़ते बादल घटाएँ और ठंडी–ठंडी हवा सब कुछ बहुत बढ़िया था।

बरसात में प्रकृति की सुन्दर छटा देख सब गद्‌गद् थे। इतने में एक अजब दृश्य देखने को मिला। पर्यटन स्थल के पास हैंण्डपम्प से अपने आप पानी आ रहा था, देख सबको हँसी आई। सभी साथियों ने पानी पी प्यास बुझाई। पास ही ताल की तरफ देखा तो उसमें बड़ी–बड़ी लहरें उठ रही थीं। साथी बोले जिधर देखो उधर पानी ही पानी चारों ओर पानी ही पानी। नदी में पानी, पहाड़ों से गिर रहे झरनों में पानी। तालाब में पानी हर कहीं पानी भरा है। बच्चे ही तो ठहरे झरने के पास बैठ सभी साथी पानी हाथ में उछाल–उछाल बोलने लगे। ''पानी पानी पानी वाह रे पानी। क्या तुम्हारी जन्म कहानी, पानी पानी। धरती पर कब आए पानी। किसने तुम्हें बनाया पानी पानी पानी, पानी पानी वाह रे पानी।'' बच्चों के मुँह से यह सब सुन पानी स्वयं आ बोला–हाँ बच्चों ''मैं पानी हूँ।'' अदृश्य आवाज सुन बच्चों के मुँह से निकला ''पानी'' सभी साथी इधर–उधर देखने लगे देखा आस पास तो कोई है ही नहीं। इतने में अतुल बोला अरे– ''कौन हो तुम ? कौन बोल रहे हो इधर–उधर आसपास तो कहीं नजर भी नहीं आ रहे ?

इस पर पानी ने कहा ''मैं पानी हूँ! तुम्हारी बातें सुन मुझे बहुत अच्छा लगा। मैं स्वयं तुमसे बात करने आ गया। तुम बोल रहे थे न। क्या तुम्हारी जन्म कहानी पानी पानी, धरती पर कब आये पानी, किसने तुम्हें बनाया पानी ?''

पानी बोला– ''तुम्हारे प्यारे मुख से, प्यारी बातें सुन–तुम्हारी उत्कंठा देख मुझे तुमसे बात करने की इच्छा हो गई और बात करने आ गया।''

बच्चों ने इधर–उधर देखा– पास तालाब में बड़ी–बड़ी लहरें उठने लगी शोर होने लगा। बालक ही तो ठहरे हैंण्ड पम्प के पास से आवाज आती सुन सभी साथी अपनी बात दोहराते हुए बोले– ''तुम पानी हो तो बताओ तुम्हारा जन्म कब कहाँ हुआ ?'' अतुल ने कहा– ''तुम धरती पर कब आए ?''

बाल सुलभ उत्कंठा को देख पानी बोला– ''बताऊँगा पर तुम धार्मिक बात समझ ऊबना मत। ध्यान से सुनना।'' बच्चे बोले– ''हम बराबर ध्यान से सुनेंगे।''

अब पानी कुछ गंभीर स्वर के साथ बोला–

आपो नारा इति प्रोक्ता नारौ वै नर सूनव:।
अयनं तस्यता पूर्व ततो नारायण: स्मृत:।।

पानी के मुँह से यह श्लोक सुनते ही अतुल मन ही मन सोचने लगा यह तो बाबा ने भी मुझे सुनाया समझाया था।

इतने में पानी बोलने लगा– ''जल नारायण–स्वरूप है सृष्टि के आरम्भ में जल ही भगवान का अयन स्थान था। भगवान का स्थान पानी में होने के कारण भगवान को नारायण कहा जाता है।''

बालक पानी की कहानी उसी की जुबानी ध्यान से सुनने लगे।

''पानी मुस्कुराते हुए बोला भारतीय ऋषि–मुनियों ने पानी के जन्म के बारे में गहन चिंतन मंथन किया। भारतीय ऋषि–मुनि उस समय के वैज्ञानिक

ही थे। उन्होंने सोच-विचार करके पानी को मौलिक रूप में नारायण कहा- ''पानी पुरुषोत्तम से ही उत्पन्न हुआ है। इसलिए यह नार भी है।'' इसी के साथ पानी ने कहा- ''एक और बात बताऊँ एक पौराणिक कथा के अनुसार (मेरा) पानी का जन्म भगवान विष्णु के पैरों से हुआ है।''

पानी की बात सुन अतुल मन ही मन खुश था सोचता रहा बाबा ने जो बातें बताई पानी भी वही बातें बता रहा है।

इतने में पानी ने कहा- ''मुझको (पानी को) पूजा जाता है। जल रूप में मुझे वरुण देव कहते हैं। पानी फिर बोला- ''यह सब ईश्वर की माया है। कौन समझेगा। ईश्वर की सृष्टि में पानी की जरूरत थी, ईश्वर ने ही पूरी की।''

पानी की कहानी उसी की जुबानी सुन बच्चे आश्चर्य से सोचने लगे। इतने में पानी फिर बोलने लगा। मैं तुम्हें (मेरा) पानी का आगे के समय का भी इतिहास बताता हूँ।

पानी बोला- ''बालको! पानी के बारे में प्राचीन भारतीय सोच को समझना सरल नहीं, क्योंकि यह आधी दैविक, आधी भौतिक और आध्यात्मिक शैली में है। इसे समझने के लिए अत्यधिक गम्भीर प्रयासों की जरूरत है।''

इतना कह पानी ने कहा आगे की बात करते हैं। वैज्ञानिकों ने पानी के बारे में बताया- ''पानी हाइड्रोजन, ऑक्सीजन से बनता है। रसायन शास्त्री इसे यौगिक मानते हैं। इसके साथ ही पानी ने कहा भारतीय दर्शन में पानी को शक्ति पदार्थ माना जाता है।'' भारतीय दर्शन के अनुसार (मैं पानी) अमर हूँ। मैं सृष्टि के पहले भी उपस्थित था वर्तमान में भी हूँ तथा भविष्य में भी हर स्थिति में रहूँगा, चाहे सृष्टि का विनाश ही क्यों न हो जाए। ध्यान से सुन रहे बच्चे पानी की बातें सुन बहुत भाव-विभोर हुए। इसी बीच पानी फिर बोला भारतीय पुरातन जल वैज्ञानिकों के अनुसार पानी आकाश वायु और तेजस के पारस्परिक क्षोभ के कारण उत्पन्न हुआ है।''

सुन बच्चे बोले- ''यह क्षोभ क्या होता है?'' इस पर पानी ने कहा- ''यह प्राकृतिक स्थिति है। प्रकृति की अपनी कहानी उसकी अपनी आवश्यकता है, पंचतत्व में निहित है।''

ज्ञानवर्धक जानकारी से बच्चे प्रसन्न थे। देख पानी भी कुछ मुस्कुराया। इधर हवा के साथ तालाब में ऊँची लहरें किनारों से आगे तक आ रही थी शोर भी हो रहा था।

पानी फिर बोलने लगा मेरे (पानी) के बारे में अतीत से मानव द्वारा कई तरह की धारणाएँ बना ली गई प्रचलित भी होती रही! मेरे बारे में (पानी की) उत्पत्ति का उल्लेख कुरान में भी है। कुरान के अनुसार अल्लाह ने छः दिनों में स्वर्ग तथा पृथ्वी का निर्माण किया।

ईश्वर ने ही पानी का निर्माण किया है। ध्यान से सुन रहे बालक इस बीच बोले- ''यह तो सब भारतीय सोच से ही मिलती-जुलती बात है।'' इस पर पानी बोला- ''हाँ! तुम ठीक कहते हो।''

पानी ने अपनी बात जारी रखते हुए फिर कहा- ''मेरे बारे में (पानी की) विज्ञान के इर्द-गिर्द और भी धारणाएँ हैं। अमरीकी वैज्ञानिक माइट्रेट के अनुसार पानी पृथ्वी के जन्म के समय से ही उपस्थित है। उनके अनुसार सौर मंडलीय धूल कणों से पृथ्वी का निर्माण हो रहा था उस समय धूल कणों पर पानी पहले ही मौजूद था। पानी ने फिर कहा कुछ वैज्ञानिक मानते हैं पृथ्वी के जन्म के कुछ समय बाद करोड़ों धूमकेतु तथा उल्कापिंण्डों से वर्षा हुई। पानी धरती पर जमा हो गया उसी से महासागरों का जन्म हुआ।

पानी बोलता जा रहा था खगोल भौतिकी की आधुनिक खोजों के अनुसार सौर मंडल के बाहरी किनारों से पानी पृथ्वी पर आया। वैज्ञानिकों के अनुमान के अनुसार मेरा (पानी का) चार सौ करोड़

वर्ष पहले धरती पर आगमन हुआ था। कुछ वैज्ञानिक चट्टानों के रिसने से मेरा (पानी) का धरती पर आना मानते हैं। पानी ने फिर समझाया इन सबके चलते हाइड्रोजन ऑक्सीजन के सहयोग से मेरा (पानी) का जन्म हुआ यह बात ज्यादा प्रचलित सी है। वैज्ञानिकों का यह भी अनुमान है आकाशगंगा व मेघों में पानी मौजूद रहा हो यह भी हो सकता है। संभव है ब्रह्मांड में हमेशा ऑक्सीजन हाइड्रोजन अत्यधिक मात्रा में मौजूद रहे हो। वैज्ञानिकों के द्वारा वायुमण्डल ग्रहों में भी मेरा पानी का होना समझा गया। पानी बोलता रहा। पानी पर अलग-अलग शोध अलग-अलग दावे हैं।

अंत में पानी बोला- ''बालको! वैज्ञानिकों का शोध व उनकी बातें अपनी जगह है। मैं प्रत्यक्ष में जीवन का आवश्यक तत्व हूँ। मेरी आत्मकथा व जन्म के बारे में सबसे प्राचीन ईश्वरीय ऋषि-मुनियों वाली भारतीय सोच ही सही है। शोध व विचारों में भारतीय ऋषि-मुनि वैज्ञानिकों से कम नहीं थे। वैसे भी सारी सृष्टि ईश्वर की है इस सृष्टि से पानी अलग नहीं।''

अतुल व साथी पाने की आत्मकथा सुन गद्‌गद् थे। भावविभोर हो आपस में बतियाने लगे। इन्हीं क्षणों में इधर-उधर देखा तो हैंण्ड पम्प से पानी आना बंद हो गया तालाब से उठने वाली लहरें शांत हो गयी। पानी की अदृश्य आवाज भी नहीं था। अतुल व सभी साथी आपस में बतिया-बतिया अचरज से इधर उधर देखते रहे।

वस्तुत: पानी अनमोल है यह सृष्टि में सबके लिए है, धरती का अमृत है। जीवन इस चे चलता है। पानी बचाएँ जीवन बचाएँ। वैसे भी चाहे खजाने भरे हों पर दुरुपयोग से वह भी खत्म हो जाते हैं।

-लाखेरी (राजस्थान)

युधिष्ठिर का युवराज बनना

- मोहनलाल जोशी, बाड़मेर (राजस्थान)

कुरू राजकुमारों की शिक्षा पूर्ण हो गई। धृतराष्ट्र को युवराज घोषित करना था। उन्होंने भीष्म, द्रोणाचार्य और विदुर जी से बात की। सभी ने कहा- पाण्डु राजा थे। कौरवों और पाण्डवों में सबसे बड़े युधिष्ठिर हैं। युधिष्ठिर का युवराज पद पर अभिषेक हो गया।

युधिष्ठिर बहुत ही धर्मात्मा थे। वे प्रजा का बहुत आदर करते थे। अर्जुन और भीम बहुत बलशाली थे। युधिष्ठिर को कोई परास्त नहीं कर सकता था। उनकी यश और कीर्ति चारों दिशाओं में फैल गयी। दुर्योधन अत्याचारी था। उसे कोई पसन्द नहीं करता था।

धृतराष्ट्र पुत्र मोह में पड़ गये। उन्होंने सोचा- मेरा पुत्र दुर्योधन कभी राजा नहीं बनेगा। युधिष्ठिर की

यश-कीर्ति से उन्हें बहुत चिन्ता हुई। धृतराष्ट्र ने कणिक नामक मंत्री से सलाह माँगी। उसने भी धृतराष्ट्र से पाण्डवों को नष्ट करने की सलाह दी। धृतराष्ट्र दुर्योधन की बात ही मानने लगा।

विज्ञान व्यंग

-संकेत गोस्वामी

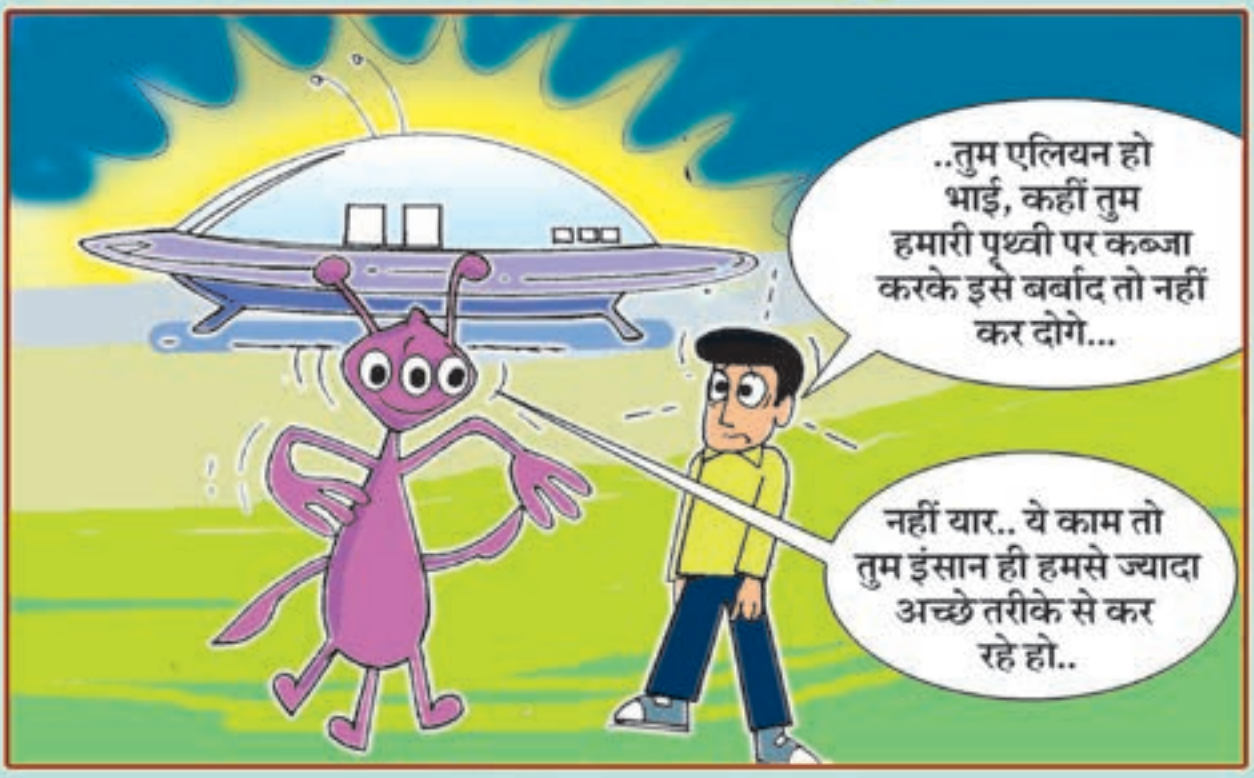

घर का वैद्य

पेट के कीड़ों का उपचार

– उषा भंडारी

सीमा ने पूछा– दादाजी! पेट में कीड़े हों तो उनका क्या उपचार है?

दादाजी ने कहा– पपीते के एक ग्राम सूखे बीज लेकर पीस लें। इस चूरन को दिन में तीन बार पानी के साथ लेवें। कीड़े मर जाएँगें और पाखाने के साथ निकल जाएँगें। यदि पपीते के बीज न हों तो अजवाइन का एक ग्राम चूरन थोड़े से गुड़ के साथ दिन में तीन बार लें। इससे भी कीड़े मर कर निकल जाते हैं।

सीमा ने जानना चाहा– ऐसा कितने दिन करना चाहिए? दादाजी ने बताया पाँच से सात दिन तक करने से सब कीड़े मर जाते हैं।

दादाजी ने आगे बताया कि छोटे बच्चों की गुदा में कीड़े कभी–कभी दिखाई देते हैं। जिससे उनको बहुत खुजली चलती हैं। ऐसे में हीरा हींग को पानी में घोल लें। उसमें रूई का फोहा भिगों लें। फोहे को गुदा पर रखने से कीड़े मर जाते हैं। थोड़ी सी हींग पानी में घोलकर पिलाने से पेट के कीड़े मर जाते हैं। इतने में मीरा बोली दादाजी अब किसी दूसरी बीमारी का उपचार बताइये।

दादाजी ने कहा– एक दिन में पूरे शरीर के डॉक्टर नहीं बन सकते हैं। अब जाकर सो जाओ। बाकी बातें कल करेंगे। सभी प्रतिदिन की तरह सोने की तैयारी करने लगे।

बुखार, उलटी और दस्त कैसे ठीक करें?

अगले दिन की बात है। दुपहर के भोजन के बाद दादाजी आराम कर रहे थे। इतने में दादाजी के एक साथी भूरालाल जी आए। भूरालाल जी ने बताया कि उनके मोहन को बुखार आ रहा है।

दादाजी ने कहा– फिकर मत करो। सब ठीक हो जाएगा। तुलसी के छः पत्ते, चार काली मिर्च, एक पीपल का पत्ता और दस ग्राम मिसरी लेना। इन सबको पानी के साथ पीसकर मोहन को पिला देना। ऐसा दिन में दो बार करना। उसका बुखार उतर जाएगा।

भूरालाल जी ने कहा– मैं जाता हूँ। शाम को सूचित करूँगा। यह कहकर भूरालाल जी चले गए।

शाम हुई और भूरालाल जी ने आकर बताया कि मोहन अब ठीक है। तब सुनीता ने कहा– दादाजी! अब हमें बुखार का उपचार बताइये?

दादाजी ने कहा– जब बहुत तेज बुखार हो। तो काली मिट्टी की गीली पट्टी पेडू पर रखें। इस पट्टी को हर दस मिनट में बदले। ऐसा करने से तेज बुखार उतर जाता है। दादाजी ने आगे बताया– चाहे जैसे बुखार हो। यदि आधा गिलास उबलते पानी में तो चम्मच नींबू का रस डाल दें। पानी ठंडा होने पर पिलाएँ। ऐसा दिन में तीन बार करें। तो बुखार उतर जाता है। सीमा ने पूछा– दादाजी! यदि ठंड और कंपकंपी के साथ बुखार आए तो क्या देना चाहिए?

दादाजी ने कहा– तुलसी के दस पत्ते दिन में तीन बार खाना चाहिए। यदि बीस तुलसी के पत्ते, दस काली मिर्च पीसी हुई और दो चम्मच शकर का काढ़ा बनाकर दिन में दो बार लें तो कैसा भी बुखार हो, पूरी तरह ठीक हो जाता है। दादाजी ने आगे बताया कि फूली हुई फिटकरी के दो ग्राम चूरन में आठ ग्राम पीसी हुई मिसरी ठीक तरह मिला लें। इस चूरन की दो ग्राम मात्रा दो–दो घंटे के बाद तीन खुराक लें। यह उपचार अचूक है। पर गर्भवती महिला को यह दवा नहीं देना चाहिए।

– इन्दौर (म. प्र.)

नायक भवानी दत्त जोशी

५-६ जून की रात। श्री भवानी दत्त जोशी की प्लाटून स्वर्णमंदिर को उग्रवादियों से मुक्त कराने हेतु चले अभियान के अन्तर्गत योजनानुसार स्वर्णमंदिर के एक विशेष भाग की ओर बढ़ी। द्वार से प्रवेश हुआ ही था कि एक छेद से अन्दर छुपे उग्रवादियों ने दनादन गोली चलाना शुरु कर दिया। सैनिक कार्यवाही में यह बड़ी बाधा जानकर कमांडिंग ऑफिसर ने अपने सैनिकों से परामर्श किया। प्राणों की चिन्ता किए बगैर नायक भवानीदत्त जी आगे आए और छोटी-सी टुकड़ी लेकर भीतर घुस गए। एक उग्रवादी उनकी कार्बाइन से तो दूसरा संगीन से मारा गया। रास्ता साफ हुआ पर वे बहुत घायल हो गए थे। तभी आड़ में एक अन्य उग्रवादी दिखा ये चीते जैसी फुर्ती से झपटे। उस समय अपनी देह की पीड़ा की परवाह किसे थी? लेकिन यह दुस्साहस जानलेवा बन गया। प्लाटून को सफलता मिली पर नायक भवानीदत्त जी को मरणोपरांत अशोकचक्र।

नायक भवानी दत्त जी १४ जुलाई १९५२ को उत्तराखण्ड के चमोली जिले के चेपरून गाँव के किसान परिवार के लाल थे। १४ जुलाई १९७० को अपने जन्मदिन पर ही गढ़वाल राइफल्स में प्रवेश पाया फिर गढ़वाल राइफल्स में आए। देश पर अपने प्राण न्यौछावर कर वे अमर हुए।

–

राजकीय मछलिया

हरियाणा की राजकीय मछली

कल्बासु

– डॉ. परशुराम शुक्ल

शानदार भारत की मछली,
भारत भर से नाता।
पाक, चीन, नेपाल देश भी,
इस मछली को भाता।।

झीलों, नदियों, तालाबों में,
कल्बासु मिल जाती।
धीरे बहते, रुके हुए जल,
में आवास बनाती।।

मीटर से थोड़ी-सी छोटी,
कसा हुआ तन पाया।
आँखें बड़ी, ओंठ कुछ छोटे,
माँसल इसकी काया।।

पूरी शाकाहारी मछली,
जल के पौधे खाती।
तल में जाकर अण्डे देती,
फिर वापस आ जाती।।

अण्डों वाली मादाओं को,
रहता खतरा भारी।
सुस्ती में होती शिकार यह,
बन जाती तरकारी।।

– भोपाल (म. प्र.)

पुस्तक परिचय

समकालीन हिन्दी बाल साहित्य के शिखर पुरुषों में एक विशेष नाम है प्रकाश 'मनु' बच्चों के लिए अपार सृजन संसार रचने वाले मनुजी के दो नवीन कहानी संग्रहों का परिचय यहाँ प्रस्तुत है।

मेरी प्रिय किशोर कहानियाँ
मूल्य- ६९५/-
प्रकाशक-साहित्य भारती
के. ७१, कृष्णानगर,
दिल्ली-११००५१

पुस्तक की भूमिका स्वरुप स्वयं मनु जी ने लंबी प्रस्तावना में इसे नई उमंगों और सपनों भरा आकाश कहा है। संग्रह की २४ कहानियाँ इस शीर्षक की स्वयं सार्थकता का प्रमाण है।

मेरी प्रिय शिशु कथाएँ
मूल्य- ६९५/-
प्रकाशक-इन्द्रप्रस्थ प्रकाशन
के. ७१, कृष्णानगर,
दिल्ली-११००५१

कहानियाँ जो बच्चों की दोस्त है, हमसफर भी यह मनोगत है मनुजी का इन ७५ शिशु कथाओं के इस महत्वपूर्ण संग्रह के लिए।

एक अनूठा अनुभव है इन कथाओं को पढ़ना।

डॉ. सुनीता हिन्दी बाल साहित्य संसार की अनुभवी वरिष्ठ कथाकार है। इन्द्रप्रस्थ प्रकाशन- के. ७१ कृष्णानगर दिल्ली-११००५१ से आपकी नया बाल कहानी संग्रह प्रस्तुत हुआ है।

मेरी प्रिय बाल कहानियाँ
मूल्य- ६५०/-

बाल कहानियाँ के अलग-अलग कई रंगों से पगी ये ३८ बाल कहानियाँ आपके लिए एक अनूठी भाव यात्रा करवाती हैं जिस यात्रा में अनोखे अनुभव है काम की बातें व मनोरंजन भी।

सौ. पद्मा चौगाँवकर बाल साहित्य में सुपरिचित प्यारी दादी हैं, ऐसी दादी जो बच्चों के मन को खूब समझती हैं और उनकी नासमझी पर समझाती भी ऐसे हैं कि बच्चे उनकी सीख खुशी-खुशी मान लेते हैं।

फिर होगी दुनिया सुन्दर
मूल्य- १५०/-
प्रकाशक-प्रकाशन विभाग
सूचना भवन सीजीओ कॉम्प्लेक्स,
लोधीरोड, नई दिल्ली-११०००३

प्रस्तुत संकलन बाल साहित्य की विधा तीन विधाओं की त्रिवेणी जैसा है- ये है पद्य नाटिकाएँ यानि कविता में कहानी नाटिकाओं के रूप में। ७ पद्य नाटिकाओं का सुन्दर संग्रह है।

गीत

शिशु गीत

– गोविन्द भारद्वाज

चाँद

मामा जी हैं चाँद हमारे,
आसमान में लगते प्यारे।
कब आओगे माँ से मिलने,
बच्चे पूछ रहे हैं सारे।

सूरज

सूरज दादा नभ के राजा,
धूप सवेरे लाए ताजा।
शाम ढले नित घर को लौटे,
दिन भर खूब बजाए बाजा।

– अजमेर (राजस्थान)

छः अँगुल मुस्कान

अध्यापक (राजू से) : राजू तुम्हारे पिता का नाम क्या है?

राजू: मती राम।

अध्यापक (छात्रों से) : राजू के पिता के नाम में श्री लगाकर बोलो बच्चो!

सभी छात्र (जोर से) : श्रीमती राम।

*****

शिक्षक (राजू से) समझो तुम्हारी जेब में तीन पाई है। अगर इनमें एक पाई और डाल दें तो क्या होगा?

राजू: मास्टर जी! मेरी जेब फट जाएगी।

शिक्षक: वह कैसे?

राजू: छोटी–सी जेब में चारपाई से।

*****

अध्यापक (एक छात्र के पिता से) : आपका बेटा कक्षा में सबसे कमजोर है।

छात्र के पिता : भगवान की दया से घर में दो– दो गायें हैं, दूध घी की कमी नहीं है फिर भी आप ऐसा कह रहे हैं।

देवपुत्र

के स्वामित्व का विवरण

फार्म–४ (नियम–८)

प्रकाशन स्थान	इन्दौर
प्रकाशन अवधि	मासिक
मुद्रक का नाम	कृष्ण कुमार अष्ठाना
(क्या भारत का नागरिक है) (यदि विदेशी है तो मूल देश)	हाँ
पता	४०, संवाद नगर, इन्दौर
प्रकाशक का नाम	कृष्ण कुमार अष्ठाना
(क्या भारत का नागरिक है) (यदि विदेशी है तो मूल देश)	हाँ
पता	४०, संवाद नगर, इन्दौर
उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार –पत्र के स्वामी हों तथा जो एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हों।	सरस्वती बाल कल्याण न्यास

मैं कृष्ण कुमार अष्ठाना एतद् द्वारा घोषणा करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

(कृष्ण कुमार अष्ठाना)
प्रकाशक के हस्ताक्षर

कहानी – विश्व रंगमंच दिवस : २७ मार्च

रंग मंच का जादूगर

– अशोक शर्मा

आज कोमल वन में राजा शेखर शेर ने हर वर्ष की भाँति इस बार भी विश्व रंग मंच दिवस पर एक रंगारंग कार्यक्रम आयोजित करने का निर्णय लिया। इसकी सूचना पूरे कोमल वन के साथियों को सूचित करने की जिम्मेदारी डम्पी बंदर को सौंपी गई।

डम्पी बंदर अपने शाला के प्रिय सखा मिंटू नेवला को साथ लेकर पूरे कोमल वन में राजा शेखर शेर की इच्छा से अवगत करवाते हुए सभी साथियों को उस दिन के कार्यक्रम में शामिल होने और अपने–अपने करतब दिखलाने का अनुरोध किया गया।

रंगमंच दिवस पर यह आयोजन कोमल वन के साथियों को बहुत पसन्द आता था। इसलिए यहाँ इस कार्यक्रम में उपस्थित होने वाले लोगों की भीड़ लग गई। पन्नू सियार के यहाँ आरक्षण होने लगा।

सब लोग उस दिन की प्रतीक्षा करने लगे।

निर्धारित तिथि को रंगमंच दिवस पर विशेष आयोजन किया गया। सब लोग अपने–अपने तरीके से करतब दिखलाने की योजना बनाई थीं।

कोमल वन में सबसे उत्सुकता कोमल हिरण को थी क्योंकि पिछले वर्ष उसने सर्वोत्तम पुरस्कार विजेता रही थी। इस बार भी वह यह पुरस्कार जीतना चाहतीं थीं।

इसके अलावा नन्हकू गीदड़, उज्ज्वल खरगोश, मनीष भालू, सैंडी जेब्रा और रितेश गेंडा भी पूरी तैयारी में जुटा हुआ था। सब लोग टिंकू लोमड़ी के अन्दर के रंगमंच के गुणों से अपरिचित थे। निर्धारित तिथि को कोमल वन में शेखर शेर के दरबार में भीड़ लगने लगा। प्रीतम हाथी ने कोमल वन में राजा शेखर शेर के द्वारा बनाए गए सभागार में आयोजित कार्यक्रम में जाने की जानकारी दी। सभी कोमल वन के साथियों का एकत्रीकरण वहाँ होने लगा। आयोजित कार्यक्रम में सबसे पहले माँ सरस्वती वंदना की गई। यह कोमल हिरण और नन्हकू मोर के द्वारा सम्पन्न किया गया।

फिर एक–एक करके मंच पर प्रतिभागियों को बुलाने की प्रक्रिया की घोषणा नरेश कौवा के द्वारा प्रारंभ किया गया। सब लोग आज नरेश कौवा को मिलें इस जिम्मेदारी से हतप्रभ थे परन्तु यह निर्णय कोमल वन के राजा शेखर शेर की थी। इसलिए यहाँ कोई विवाद पैदा करने की हिम्मत नहीं जुटा पा रहा था। नरेश कौवा आकर मंच संचालन की जिम्मेदारी लेते हुए सबसे पहले आयोजित रंगमंग दिवस कार्यक्रम में आने के लिए धन्यवाद ज्ञापित किया। फिर अभिवादन करते हुए मंच पर आकर अपने–अपने करतबों को दिखाने के पहले आवश्यक दिशा निर्देश से अवगत कराया।

सबसे पहले उज्ज्वल खरगोश को बुलाया गया। आज उज्ज्वल खरगोश फिल्म अभिनेता राजकपूर के रोल में था। ड्रेस पहनकर उसने राजकपूर द्वारा अभिनीत मेरा जूता है जापानी बोल पर अपने मधुर राग से सभी कोमल वन के साथियों को खूब हँसाया। यह गाना और रंगमंच दिवस पर उनके अभिनय की खूब प्रशंसा करते हुए उपस्थित लोगों ने तालियाँ बजाकर उज्ज्वल खरगोश के इस रंगमंच के आरंभ को खूब पसंद किया गया।

इसके बाद नन्हकू मोर की बारी थी। नरेश कौवा के बुलावे पर नन्हकू मोर ने मंच पर आकर कोमल वन के साथियों के बीच एकता, ममता और अपनत्व पर एक झूमर नृत्य प्रस्तुत किया गया। यह सब लोगों को बहुत पसंद आया। फिर रितेश गेंडा की बारी आई। उसने अपने मधुर संगीत से राजा शेखर शेर सहित उसके प्रिय सखा प्रीतम हाथी के मनों को छू गया। रितेश गेंडा ने भक्ति संगीत से राजा शेखर शेर को आह्लादित कर दिया।

फिर नरेश कौवा मंच पर आकर कोमल हिरण को मंच पर लाकर कोमल वन के साथियों के समक्ष अपने नृत्य को प्रस्तुत करने का आग्रह किया।

तुरंत कोमल हिरण मंच पर आकर कोमल वन के साथियों को अभिवादन करते हुए अपने प्रिय नृत्य कथकली नृत्य करते हुए कोमल वन के साथियों को झकझोर दी। तालियों की गड़गड़ाहट से पूरा सभागार गूँज उठा। इसके बाद मनीष भालू, सैंडी जेब्रा और प्रीतम हाथी ने भी मंच की रौनक बढ़ाई।

अब अंतिम प्रतिभागी टिंकू लोमड़ी था। नरेश कौवा ने आयोजित कार्यक्रम में सम्मिलित होने आए साथियों को इस तरह के कार्यक्रम में सहभागी होने के लिए बधाई देते हुए अंतिम नाम के तौर पर टिंकू लोमड़ी को मंच पर आकर कोमल वन के साथियों के समक्ष अपनी कला को दिखलाने का अनुरोध किया।

टिंकू लोमड़ी अंतिम प्रतिभागी था, इसलिए लोगों में अधिक उत्सुकता थी। फिर शांतचित्त टिंकू लोमड़ी मंच पर आकर सबसे पहले कोमल वन के राजा शेखर शेर का अभिवादन किया। तालियों की गड़गड़ाहट से सभागार गूँज उठा। कोई भी प्रतिभागी ऐसा नहीं किए थे। राजा शेखर शेर को टिंकू लोमड़ी का यह व्यवहार बहुत अच्छा लगा। राजा शेखर शेर से आशीर्वाद लेकर टिंकू लोमड़ी ने राष्ट्र भक्ति गीत गाना प्रारंभ किया। इतनी मधुर संगीत से कोमल वन के साथियों को कभी सामना करने का अवसर नहीं मिला था। टिंकू लोमड़ी ने गीत–संगीत के इस असाधारण गुणों से सभागार में उपस्थित साथियों की खूब वाहवाही बटोरी। साथियों के अनुरोध पर मुकेश के प्रेम से भरे मशहूर गीत ''सच है दुनिया वालों हम हैं अनाड़ी'' बोल पर राजकपूर की तरह मंच पर अभिनय कर कोमल वन के साथियों के हृदय में जगह बना ली।

तालियों की गड़गड़ाहट ने यह सिद्ध कर दिया कि आज के रंगमंच का जादूगर टिंकू लोमड़ी ही है।

गीत समाप्त होने पर राजा शेखर शेर ने टिंकू लोमड़ी को अपने पास बुलाकर शाबाशी दी और अत्यंत प्रशंसा करते हुए भविष्य में आगे बढ़ते रहने का आशीर्वाद दिए। अब पुरस्कार और सम्मान दिए जाने का कार्यक्रम था। राजा शेखर शेर के द्वारा गठित मण्डल के द्वारा इस बार के रंगमंच के जादूगर के रूप में टिंकू लोमड़ी के नाम को अंतिम रूप दिया गया। राजा शेखर शेर के कहने पर प्रीतम हाथी ने टिंकू लोमड़ी को विजेता के रूप में घोषित किए। तालियों से सभागार गूँज उठा।

फिर राजा शेखर शेर ने सभी साथियों को भोजन करने के उपरांत अपने–अपने घरों को जाने का आदेश दिया। सब लोग मस्ती से रात का भोजन करने के बाद अपने–अपने घरों के लिए चल पड़े। रास्ते भर केवल टिंकू लोमड़ी के अभिनय की चर्चा करते रहे। उन्हें आज अपने कोमल वन में रंगमंच का एक जादूगर जो मिल गया था।

– पटना (बिहार)

आपकी पाती

'देवपुत्र' का 'अवधेश विशेषांक' देखा। सचित्र पौराणिक कथाओं से सुसज्जित इस अंक ने बहुत प्रभावित किया। आज जब जीवन मूल्य समाप्त प्राय हो रहे हैं इस अंक की सुरुचिपूर्ण कथाएँ बच्चों के मन में नव–चेतना का संचार करेंगी। पावनता का प्रतीक यह अंक अनमोल है। बाल साहित्य को आपकी पत्रिका द्वारा दिया। यह अवदान वास्तव में प्रशंसनीय है। इस हेतु आप बधाई के पात्र है।

– सुकीर्ति भटनागर पटियाला (पंजाब)

भगवान श्री राम और उनके पूर्वज कुछ महाप्रतापी अयोध्या नरेशों के अल्प परिचय पर केन्द्रित पौराणिक कथाओं पर आधारित 'देवपुत्र' का 'अवधेश अंक' प्राप्त करके मैं तो धन्य हो गया।

अपनी संस्कृति के बारे में ज्ञान से भरपूर इतनी सामग्री शायद ही कहीं अन्य पत्र पत्रिका द्वारा उपलब्ध करवाई गई हो।

'देवपुत्र' का यह अंक तो एक दस्तावेज की भाँति सम्भाल कर रखने वाला है। एक बार इसे पढ़ना शुरू करने पर नजरें उठा पाना मुश्किल हो जाता है और ज्ञान की इस गंगा में पाठक डुबकियाँ लगा कर अपने भाग्य पर गर्व कर उठता है तथा निरंतर प्रभु राम का स्मरण भी करता रहता है तथा धन्यवाद भी करता रहता है।

इतना यादगारी अंक निकाल कर पाठकों पर उपकार करने लिए आपको तथा आपके सहयोगियों को बहुत–बहुत बधाई एवं शुभकामनाएँ। जय श्रीराम।

– डॉ. फकीरचंद शुक्ला लुधियाना (पंजाब)

देवपुत्र का जनवरी २०२४ का यह विशेष अंक राम की वंश परंपरा के राजाओं का बहुत ही अच्छा परिचय प्रस्तुत कर रहा है। कथा लेखन और चित्रांकन भी बेहतरीन है। हर रचना के पहले एक दोहे से सारांश भी बताया गया है। पृष्ठ दो पर आपकी कविता में सारी बातें आ गई है। यह रचना भी अपने आप में एक ऐतिहासिक दस्तावेज है। इस अंक की संकल्पना सटीक व सार्थक है। इसका समसामयिक व प्रासंगिक होना भी विशेष बात है। आपको और टीम को हार्दिक बधाई।

– प्रकाश तातेड़
सहसंपादक बच्चों का देश, जयपुर (राज.)

मान्यवर, सम्मोहन आवरण से सुसज्जित 'अवधेश विशेषांक' को यदि एक शब्द में मूल्यांकित करना हो तो कहूँगा– अप्रतिम। छविधाम श्रीराम के जीवन की क्या खूब झाँकी सजाई है आपने। उस पर प्रारंभ में कथासार को काव्य पँक्तियों में आबद्धकर आपने गागर में सागर जैसा कार्य किया है। इन पँक्तियों से कथा के प्रति सहज उत्सुकता तो जाग्रत होती है, उसमें अंतर्निहित मूल्य की भी सहज अनुभूति हो जाती है।

बालकों के समग्र विकास की बात करने वालों को समझना चाहिए कि उनका आध्यात्मिक और चारित्रिक विकास भी सर्वथा अपेक्षित है। यह विशेषांक उस दिशा में अद्वितीय प्रस्तुति है।

और वैसे भी इस अंक की उपादेयता केवल बालकों के लिए नहीं, सभी के लिए है। इसका विश्व स्तर पर प्रसार होना चाहिए। इस अप्रतिम प्रस्तुति के लिए आपको हार्दिक बधाई देते हुए माथा ऊँचा हो गया

है। वह माथा श्रीराम के चरणों में झुका रहा हूँ। साधुवाद।

–डॉ. नागेश पांडेय 'संजय'
शाहजहाँपुर (उ. प्र.)

नमस्कार, देवपुत्र विशेषांक दुर्गापुर पश्चिम बंगाल में पहुँच गया है। बेटा बहू बच्चे सब प्रसन्न है इस विशेषांक को देखकर। बहू डॉक्टर गुँजा गुप्ता ने लिखकर भेजा है कि देवपुत्र का यह विशेषांक वाकई विशेष है। केवल बच्चों के लिए ही नहीं बड़ों के पढ़ने के लिए भी उपयोगी एवं संग्रहणीय है। बहुत महत्वपूर्ण जानकारी एवं कथाएँ हैं इसमें। संपादक मंडल को साधुवाद। लेकिन मुझे तो देखने नहीं मिला क्योंकि मैं मुंबई में हूँ।

– सुधा गुप्ता अमृता , कटनी (म. प्र.)

भारत की विरासत और संस्कृति को सहेजने का सराहनीय प्रयास है 'देवपुत्र' का अवधेश विशेषांक

अति सराहनीय व प्रतिष्ठित 'देवपुत्र' पत्रिका का जनवरी माह २०२४ का ५० पृष्ठीय अवधेश विशेषांक हस्तगत हुआ। जिसका हार्दिक अभिनंदन है। स्वागत है। संपादक बड़े भैया यानी गोपाल माहेश्वरी जी ने अपनी बात के माध्यम से इस अंक के प्रणयन के बारे में प्रकाश डाला है कि प्रस्तुत अंक में पौराणिक कथाओं के माध्यम से बालकों में सत्य, त्याग, शौर्य जैसे जीवन मूल्यों की स्थापना का प्रयास किया गया है। उनका यह भी कहना है कि भले ही ये पौराणिक कथाएँ अविश्वसीन कल्पना का आभास देती हैं परन्तु ये उस काल की सच्चाइयाँ हैं जो हमें अपने सांस्कृतिक बोध से जोड़ती हैं।

पत्रिका के प्रथम पृष्ठ पर 'सूर्यवंश : राम के पहले राम के बाद' में सभी महान पात्रों की काव्यात्मक प्रस्तुति हुई है। एक के बाद एक श्री राम की वंशावली 'आदिपुरुष : मनु' से शुरू होकर राजा इश्वाकु, सत्यवादी राजा हरिश्चंद्र, राज सगर, महान गोभक्त राजा दिलीप, गंगा को पृथ्वी पर अवतरित कराने वाले भगीरथ, अम्बरीष राजा, राजा रघु, दादा महाराज अज, दशरथ, कौसल्या। तत्पश्चात दशरथ–कौसल्या व राम से संबंधित दस प्रसंग हैं, जिनमें यज्ञ से कामनापूर्ति, देवसहायक दशरथ (कैकयी द्वारा दशरथ के प्राणों की रक्षा), राम का जन्म (भए प्रकट कृपाला), अयोध्या का आनंद, कौसल्या की लोरियाँ, सबके राम (बचपन के प्रसंग), अपनत्व का विकास, राष्ट्र धर्मरक्षकों का निर्माण, वास्तविक परीक्षा की घड़ी, राम होने का अर्थ जिसमें एक श्लोकी रामायणम् भी है जिसका संदेश है– 'असंभव को भी संभव बनाने के लिए प्रयत्नों को करने वाला राम होता है। यही है राम होने का एक अर्थ हम सबके लिए। सारांशत: प्रत्येक कथा में कोई न कोई बड़ी सीख छुपी है। मुझे यह कहने में कोई संकोच नहीं कि पत्रिका का यह विशेष अंक बालकों के साथ–साथ बड़ों के ज्ञान को भी समृद्ध करने वाला है। बहुत सी बातें मुझे भी पता नहीं थी। सबसे अच्छी बात यह है कि कथा से संबंधित रंगीन चित्र दिए गए हैं जो पत्रिका के अंक को निश्चित रूप से बालकों के लिए आकर्षक व पठनीय बनाते हैं।

रामलला के बालपन का मनोहारी मुखपृष्ठ सहज आकर्षण में बाँध लेता है। क्लिष्टता से बचते हुए बालकों की बोली में यानी अत्यंत सरल, सहज भाषा का प्रयोग किया है। उदाहरण स्वरूप 'आदिपुरुष : मनु' वाले पाठ में लेखक ने लिखा है– 'ब्रह्मा जी को सारी सृष्टि का दादाजी माना गया है।' २२ जनवरी, २०२४ को रामलला की अयोध्या में पुन: वापसी नि:संदेह एक महान सांस्कृतिक व ऐतिहासिक घटना होगी और इससे पूर्व इस विशेषांक का आना प्रत्येक बालक को पढ़ने के लिए आकर्षित करेगा। अभिभावकों से भी अनुरोध कि वे बच्चों को अपने साथ बैठाकर अपनी विरासत और महान संस्कृति से परिचय अवश्य कराएँ तथा उनकी जिज्ञासाओं का समाधान अवश्य करें। वस्तुत: इस श्रेयस्कर कार्य के लिए गोपाल माहेश्वरी जी साधुवाद के पात्र हैं।

– डॉ. शील कौशिक,
सिरसा (हरियाणा)

आज जब नैतिक मूल्यों के पुनर्स्थापना की आवश्यकता हर व्यक्ति महसूस कर रहा है। ऐसे में अवधेश विशेषांक जो श्री राम से जुड़ी २२ कथाओं को अपने में समेटे हुए है, उम्मीद की लौ को प्रज्ज्वलित करता है। जनवरी २०२४ का यह अंक बाल जीवन में चरित्र निर्माण के अपने समर्पण की घोषणा सा करता प्रतीत होता है। पत्रिका के आरंभ में ही श्री गोपाल माहेश्वरी जी ने श्री राम की पूरी वंशावली से रोचक ढंग से परिचय कराया है। निश्चिय यह जानकारी बच्चों के लिए रोचक और ज्ञानवर्द्धक होगी। संपादकीय में निश्चित रूप से संपादक जी अपनी बात स्पष्ट रूप से बताने में सफल हुए हैं। २२ जनवरी को अयोध्या में श्री रामलला के अपने मंदिर में विराजमान होने के शुभ अवसर पर यह एक देवपुत्र की कथांजलि है।

'आदि पुरुष मनु' में रोचक ढंग से बच्चों के सामने यह तथ्य आता है कि राजा का धरती पर उद्भव कब और कैसे हुआ और कौन थे धरती के प्रथम राजा। राजा हरिश्चंद्र की कहानी सत्य निष्ठा को पुन: स्थापित करती है। राजा सगर, राजा दिलीप, राजा भगीरथ, सुदर्शन चक्र को लौटाने वाले एकमात्र राजा अम्बरीष, महादानी राजा रघु, साहसी महाराज अज, राजा दशरथ और माता कौशल्या के पूर्व जन्म की कहानी मन को लुभाती है। अनेक कहानियों से होते हुए पाठक राम जन्म की कथा तक आता है और रामचरित मानस के दोहे– ''भए प्रकट कृपाला दीनदयाला कौसल्या हितकारी...'' के आनंद से सराबोर हो जाता है। कथा यहाँ ही नहीं रुकती है अनेक प्रसंगों से होती हुई आज वर्तमान समय तक आती है और अयोध्या में राम मंदिर निर्माण तक की गाथा हमें सुनाती है।

पूरी पत्रिका पढ़कर इस अंक की संकल्पना करने में जो श्रम और समर्पण है उसे अनुभव किया जा सकता है। रंगीन चित्र मन को मोह लेते हैं। इस अंक की जितनी भी प्रशंसा की जाए कम ही है। संपादक और संपादकीय टीम का हार्दिक अभिनंदन।

नीलम राकेश, लखनऊ (उ. प्र.)

बाल संस्कार निर्माण की पौधशाला बना अवधेश विशेषांक

संपादक गोपाल माहेश्वरी जी और पूरा देवपुत्र परिवार को इस अंक की परिकल्पना के लिए पूरे भारतीय समाज को साधुवाद देना चाहिए। यह अंक उस समय आया है जब अयोध्या में नवनिर्मित राम मंदिर में राम लला की मूर्ति की स्थापना होनी है। ऐसे समय में सहज की बच्चों के मन में राम, दशरथ, कौसल्या आदि चरित्रों को लेकर सहज जिज्ञासा पैदा होती है और वह उनकी दिलचस्पी अधिक से अधिक जान लेने के लिए उतावली रहती है। जिसे एक अंक में बहुत ही सुंदर ढंग से एक–एक पृष्ठ के साथ जोड़ा और संजोया गया है। साथ ही सजावट का तो कहना ही क्या ? हर पृष्ठ चित्ताकर्षक है। जिसका न केवल शीर्षक श्रेष्ठ है बल्कि साथ में दिया गया काव्यात्मक परिचय भी पठन आनंद के साथ–साथ याद करने योग्य है।

प्रत्येक रचना को तोरण द्वार के साथ सजा हुआ देखकर भी मन प्रसन्न होता है। तोरण द्वार एक ओर सनातन धर्म के ध्वज का चिन्ह तथा दूसरी और सूरजवंशी कुल का प्रतीक सूरज को अंकित करना भी सुंदर परिकल्पना का ही हिस्सा है।

इस अंक को पढ़ने के बाद राम जीवन चरित्र के बारे में अधिक जानने की बच्चों के मन में उत्सुकता जाग्रत होगी। घर में आरती के समय 'भये प्रगट कृपाला' गाया जाता है यह तो बच्चे सुनते हैं किन्तु इसके मर्म की वास्तविकता पढ़ने के बाद विकसित होती है।

बच्चे तो बच्चे, बड़े भी इस अंक को बड़े चाव से पढ़ेंगे और संग्रहित करके रामायण, महाभारत जैसे ग्रंथ के साथ संजोकर रखेंगे।

सरल और सहज शब्दों में पूरी रामायण के चरित्रों को उनके वंश गौरव, इतिहास, घटनाओं का उल्लेख संपादकीय में काव्यात्मक रूप में करने का प्रयोग भी बहुत अनुपम और ऐतिहासिक बन पड़ा है।

सांस्कृतिक गौरव, सनातन धर्म, मर्यादित

आचरण, सत्य, कर्त्तव्य जैसी न जाने कितनी सारी गौरवमयी भारत की सांस्कृतिक झलक को समाहित करके ५० पृष्ठों में समेटा और सहेजा गया है, अनंत काल तक के लिए।

इस तरह के विशेषांक उच्च कोटि के विचार का ही परिणाम है। जो बहुत परिश्रम, समय और ज्ञान के साथ अन्वेषण माँगते हैं।

– डॉ. विमला भंडारी,
सलूंबर (राजस्थान)

प्रिय भाई माहेश्वरी जी,

'देवपुत्र' पत्रिका की एक निराली धज है। एक ऐसी सुंदर पत्रिका, जो जितनी पठनीय है, उतनी ही दर्शनीय भी। कभी-कभी लगता है, जब हम बच्चे थे, तब ऐसी सुंदर, मोहक और सुदर्शन पत्रिका क्यों न थी। यदि होती तो हमारा बचपन कुछ और आनंदमय और मिठास लिए होता।

पर एक सुख भी है। अब जब भी 'देवपुत्र' पढ़ता हूँ, तो सचमुच एक छोटा बच्चा ही बन जाता हूँ। तिहत्तर वर्ष का एक छोटा सा बच्चा। जो पत्रिका की सुंदर कहानियाँ, कविताएँ और नाटक पढ़कर मानो किसी और ही दुनिया में पहुँच जाता है। जिसमें कल्पना की नई-नई उड़ानें भरने का सुख है।

अभी कुछ अरसा पहले ही मिले 'देवपुत्र' अवधेश विशेषांक ने तो सचमुच मुग्ध ही कर दिया। यह एक अपूर्व, अद्भुत और ऐतिहासिक विशेषांक है, जिसकी कल्पना कर पाना भी मेरे लिए कठिन था।

इसे पढ़ते हुए लगा कि मैं इतिहास के एक विशाल गलियारे में पहुँच गया हूँ। जहाँ अयोध्या के सभी नरेश अपने-अपने गौरव और वैभव के साथ उपस्थित हैं और पूरी अयोध्यापुरी मानो सांस लेते हुए हमारे आगे साकार हो उठी है।

और फिर हम सभी के आराध्य राम जैसे एक लंबे वनवास के बाद फिर से अयोध्या लौट आए हैं और उनका भव्य मंदिर भारत देश की कीर्ति शिखा बनकर, सारी दुनिया को मोह रहा है।

बच्चों की कोई पत्रिका कैसे बच्चों के सांस्कृतिक उत्थान की पत्रिका बन जाती है, यह देखना हो तो 'देवपुत्र' के अवधेश विशेषांक को बार-बार पढ़ना चाहिए।

इतनी लंबी और सघन पुराण कथाओं को कैसे बच्चों के लिए सीधी-सादी भाषा में प्रस्तुत किया जा सकता है। पत्रिका का यह अंक इसकी एक दुर्लभ मिसाल है।

अंत में इस वरेण्य विशेषांक के लिए भाई माहेश्वरी जी, आपको तथा आपके सभी सहयोगियों को फिर-फिर बधाई और साधुवाद।

मेरा बहुत-बहुत स्नेह और आशीर्वाद।

– प्रकाश मनु,
फरीदाबाद (हरियाणा)

अद्‌भुत, अपूर्व 'देवपुत्र' का अवधेश विशेषांक। आरंभ में श्री गोपाल माहेश्वरी जी की सुन्दर काव्यकृति, एक तरह से सम्पूर्ण अंक का सार है।

'देवपुत्र' के एक-एक अध्याय में, मनु से मानव, सूर्यवंश की उत्पत्ति, श्री राम के पूर्वजों की वंशमाल के ओजस मोती- राजा हरिश्चन्द्र से लेकर राजा दशरथ- कौशल्या के राम। मनोहारी चित्रांकन के साथ, पढ़ते हुए मन प्रफुल्लित होता है।

यह श्रमसाध्य प्रस्तुति बाल पाठकों में ज्ञानवृद्धि के साथ उनमें अपनी संस्कृति और मानवीय मूल्यों के प्रति आस्था जगाएगी।

वे ये भी जानेंगे कि हमारे प्राचीन ग्रंथों में असंभव सी लगने वाली घटनाएँ, आधुनिक ज्ञान-विज्ञान (आयुर्वेद, अस्त्र, भू, अंतरिक्ष और सामुद्रिकी) का मूल आधार है।

लम्बे, कठिन संघर्ष के बाद २२ जनवरी २०२४ के दिन, भव्य मंदिर में रामलला विराजेंगे।

यह अमर इतिहास का स्वर्णिम दिन होगा।

जय श्री राम।

– पद्मा चौगांवकर,
गंजबासौदा (विदिशा)

तुमको नमन हमारा

– राजेन्द्र प्रसाद श्रीवास्तव

भूल सकेगा कभी न भारत यह बलिदान तुम्हारा।
भगतसिंह सुखदेव राजगुरु तुमको नमन हमारा।

देख-देखकर दुखी हुए तुम
जन-जन की पीड़ाएँ।
जन-मन की पीड़ा हरने सब
त्यागी सुख सुविधाएँ।
अँग्रेजों के लिए आँख में, सदा रहा अंगारा।

बहरे अँग्रेजी शासन को
अपनी बात सुनाने।
संसद में जाकर बम फोड़ा,
ऐसे थे दीवाने।
भागे नहीं, निडर होकर, यह दुस्साहस स्वीकार।

पराधीनता दमन और,
उत्पीड़न रास न आया।
नवयुवकों में आजादी का-
सोया भाव जगाया।
अपने प्राणों से भी ज्यादा तुम्हें वतन था प्यारा।

तीनों गाते एक साथ माई
रंग दे बसंती चोला।
चले चूमने फाँसी तब-
अँग्रेजी शासन डोला।
हँसते-हँसते चले गए रोता था भारत सारा।

– विदिशा (म. प्र.)

रवि लायट् का विस्मयकारी भारत

1500 साल से भी अधिक समय पहले कानपुर के निकट भितरगांव में केवल ईंटों से बना लगभग 70 फ़ीट ऊंचा यह मन्दिर गुप्त कालीन वास्तुकला के अद्भुत नमूनों में से एक है। अपनी सुरक्षित तथा उत्तम साँचे में ढली ईंटों के कारण यह विशेष रूप से प्रसिद्ध है क्योंकि इसकी एक-एक ईंट सुंदर एवं आकर्षक आलेखों से रचित थी। इसीलिये मन्दिर के ढाँचे से अलग हुई तमाम ईंटें लखनऊ संग्रहालय में अभी भी सुरक्षित हैं। इसके अंदर के दो-दो फ़ीट लंबे-चौड़े खाने अनेक सजीव एवं सुंदर उभरी हुई मूर्तियों से भरे हुए थे। यह मन्दिर जिस मंच पर बना है उसका आकार 36 फ़ीट X 47 फ़ीट है। दीवार की मोटाई 8 फ़ीट है और ज़मीन से शीर्ष तक की कुल ऊंचाई 68.25 फ़ीट है जिसमें कोई खिड़की नहीं है।

सन 1927 में लाहौर में जन्मीं कामिनी कौशल (वास्तविक नाम : उमा कश्यप) न केवल अपने समय में दिलीप कुमार, राज कपूर व देव आनंद जैसे दिग्गज अभिनेताओं की सफल नायिका रहीं और अब न केवल वर्तमान समय में सबसे अधिक उम्र की अभिनेत्री हैं वरन इन्होंने अभी कुछ समय पूर्व तक 'चेन्नई एक्सप्रेस' और 'कबीर सिंह' जैसी फिल्मों में काम करते हुए एक रिकॉर्ड भी बनाया है।

शबनम मौसी, मध्य प्रदेश राज्य विधान सभा के लिए वर्ष 1998 से 2003 तक शहडोल जिले के सोहागपुर निर्वाचन क्षेत्र से विजयी होने वाली पहली किन्नर विधायक थीं।

किसी का कद उसकी लम्बाई से नहीं, बल्कि उसकी काबलियत और उपलब्धियों से मापा जाता है और इसे सिद्ध किया है देहरादून की, राजस्थान कैडर से सन 2006 बैच की आई.ए.एस. अधिकारी, आरती डोगरा (पुत्री : कर्नल राजेन्द्र व कुमकुम डोगरा) ने जो इस पद तक पहुंचने वाली सबसे कम लम्बी यानी महज़ साढ़े तीन फ़ीट कद की हैं।

© gyanhim@gmail.com/ 08077354501

डाक पंजीयन : एम.पी./आय.डी.सी./६२३/२०२४-२०२६ | आर.एन.आय. पं. क्रं. ३८५७७/८५
प्रकाशन तिथि २०/०२/२०२४ | प्रेषण तिथि २९/०२/२०२४ | प्रेषण स्थल- आर.एम.एस., इन्दौर

जुलाई २०२२ के अंक से देवपुत्र का संशोधित मूल्य निम्नानुसार है।

एक अंक ३०/- वार्षिक सदस्यता २००/- १५ वर्षीय सदस्यता २०००/-

एक ही पते पर १० या अधिक अंक एक साथ मँगवाने पर वार्षिक शुल्क १५०/- प्रति अंक

कृपया शुल्क भेजते समय चेक/ड्राफ्ट पर केवल

'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' लिखें।

बाल साहित्य और संस्कारों का अग्रदूत

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र सचित्र प्रेरक बहुरंगी बाल मासिक

स्वयं पढ़िए औरों को पढ़ाइये

अब और आकर्षक साज-सज्जा के साथ

अवश्य देखें- वेबसाईट : www.devputra.com

सरस्वती बाल कल्याण न्यास, इन्दौर के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक कृष्णकुमार अष्ठाना द्वारा टी.एन. ट्रेडर्स, सांवेर रोड, इन्दौर से मुद्रित एवं ४०, संवाद नगर, इन्दौर से प्रकाशित
प्रधान सम्पादक - कृष्णकुमार अष्ठाना